

(कान्य संग्रह)

रचनाकार जगदीश श्योराण

BFC PUBLICATIONS

BFC PUBLICATIONS

प्रकाशक:

BFC Publications Private Limited CP -61, Viraj Khand, Gomti Nagar, Lucknow – 226010

ISBN: 978-93-91031-29-9

कॉपीराइट (©) - जगदीश श्योराण (2021)

सभी अधिकार सुरक्षित।

प्रकाशक की अनुमित के बिना इस पुस्तक के किसी भी भाग की न तो प्रतिलिपि बनाई जा सकती है, न पुनरूत्पादन किया जा सकता है और न ही फोटोकॉपी और रिकॉर्डिंग सिहत किसी भी माध्यम से अथवा किसी भी माध्यम में, किसी भी रूप में प्रेषित या पुनःप्राप्ति के उद्देश्य से संरक्षित किया जा सकता है। कोई भी व्यक्ति जो इस कार्य के प्रकाशन के संबंध में कोई भी अनाधिकृत कार्य करता है, क्षित के लिए कानूनी कार्यवाही और नागरिक दावों के लिए उत्तरदायी हो सकता है।

इस पुस्तक में व्यक्त किए गए विचार और प्रदान की गई सामग्री पूरी तरह से लेखक की है और प्रकाशक द्वारा सद्भाव में प्रस्तुत की गई है। सभी नाम, स्थान, घटनाएं और घटनाक्रम या तो लेखक की कल्पना की उपज हैं या काल्पनिक रूप से उपयोग की गई है। कोई भी समानता विशुद्ध रूप से संयोग है। लेखक और प्रकाशक इस पुस्तक की सामग्री के आधार पर पाठक द्वारा की गई किसी भी कार्रवाई के लिए जिम्मेदार नहीं होंगे। इस कार्य का उद्देश्य किसी भी धर्म, वर्ग, संप्रदाय, क्षेत्र, राष्ट्रीयता या लिंग की भावना को ठेस पहुंचाना नहीं है।



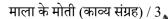


खंडन

इस पुस्तक के किसी भी अंश अथवा सामग्री को बिना अनुमित के पुनरूत्पादित या प्रसारित नहीं किया जा सकता। लेखक/प्रकाशक से बगैर किसी लिखित अनुमित प्राप्त किए, इसकी नकल बनाना, फोटोकॉपी या अन्य सूचना सम्बंधी माध्यमों से प्रकाशित करना कानूनन अपराध है।

> माला के मोती- काव्य संग्रह सर्वाधिकार- जगदीश श्योराण आवरण एवं साजसज्जा- सुमित पिलानी

22222





समर्पण भाव

ऐसी शक्ति मुझको देना, गुण गाऊं हरदम तेरे। सारे मन के भ्रम मिटा दे, ओ मालिक सच्चे मेरे। हे निराकार तु कण-कण में है, तू प्रेम का दीप जला देना। तेरी रोशनी से जगमग है, भटके तो राह दिखा देना। ऊंच-नीच और छोटे-बडे का. तेरे घर में लेखा नहीं। सब प्राणी हैं तुमको प्यारे, कभी दो नजरों से देखा नहीं। ओ सकल जहां के जीवनदाता, अपना हाथ सदा ही रखना जो भटकें हम राह से तेरी. बांह पकड कर हरदम रखना। 22222



आभार

प्रथम काव्य संग्रह के अनुभवों और आपके सहयोग और आशीर्वाद के फलस्वरूप मेरा दूसरा काव्य संग्रह आपके हाथ में है। अपनी पुरानी बातों को फिर से दोहरा रहा हूं और वैसे भी अच्छी और सच्ची बात को दोहराने में कोई हर्ज भी नहीं होता। जो भी पुस्तक लिखी जाती है वह कहीं न कहीं धर्म और नैतिकता के साथ साथ व्यवस्था पर प्रश्न उछालते हुए सुधार की आशा का संचार भी करती है। वैसे भी साहित्यिक धर्म सबका सांझा होता है। बस फर्क लिखने की भाषा और शैली का होता है। मैंने अपना पूरा प्रयास किया है कि मैं ज्वलंत मुद्दों को कविताओं के माध्यम से उठाते हुए आगे के लिए प्रस्थान करूं। अपने श्भिचन्तकों के स्नेह और प्रगाढ़ प्रेम ने ही मुझे अपने अनगढ़ बिखरे भावों को समेटने और गढ़ने की कला सिखायी है, जिसके लिए उनका आभार प्रकट करता हूं। मेरा दूसरा काव्य संग्रह माला के मोती अनुभवों की यात्रा के समान है। 36 वर्षों की अपनी राजकीय यात्रा पूर्ण करने के बाद यह मेरे लिए एक नई डगर और नया सफर था, जिसमें मेरे मन के भावों को प्रकट करने का सुनहरा अवसर है। मैंने अपनी तरफ से पूरा प्रयास किया है कि अपनी हर रचना में स्वयं उपस्थित दिखाई दूं। यह कविताएं वास्तव में मेरे जीवन के अलग-अलग अध्याय हैं और जो मुझे जानते हैं उन्हें यह रचनाएं पढ़ते हुए जरूर मेरी उपस्थिति का आभास होगा। हमारी संस्कृति सदा ही गहन और गम्भीर रही है और इसको साहित्यकारों ने अलग अलग रूप और आयाम दिए हैं। इसी संस्कृति में धर्म और नैतिकता को आगे रखकर महान साहित्यकारों ने अपनी कलम से प्रबल और पुष्ट किया है, तो दूसरी तरफ कुछ

माला के मोती (काव्य संग्रह) / 5

साहित्यकारों ने समाज की बुराइयों को उजागर करके सम्भलने का रास्ता भी दिखाया है।

माला के मोती काव्य संग्रह में भी अलग-अलग रंग भरने का प्रयास किया है। समाज में फैली बुराइयों, नारी उत्पीड़न की घटनाओं और विरोध की भाषा को दबाने के प्रयास का मूकदर्शक बनकर तो समर्थन नहीं किया जा सकता। सभ्य समाज के लिए आवश्यक है कि वह अपने दायरे में आने वाली हर घटना पर नजर रखे और आवश्यकतानुसार अपनी प्रतिक्रिया भी दे। बदलते परिवेश में भी पुरानी मान्यताओं और परम्परा का लबादा ओढ़कर बैठे रहना हमारा दायरा सीमित कर देगा। इसलिए आगे बढ़ने के लिए दूसरे लोगों से कदम से कदम मिलाकर चलना भी हमारी मजबूरी और जरूरी है। लम्बे समय तक सरकारी सेवा में रहने के कारण अब अपने मन के भावों को कलम के माध्यम से प्रकट करने का उत्साह ही कुछ अलग है। हाथ पर हाथ रखकर नहीं बैठना चाहिए। हाथ में कलम, कुदाली या लाठी कुछ न कुछ को उठाना ही पड़ता, इसलिए मैंने कलम को उठाने का फैसला लिया ताकि मैं अपनी इस माला को पूरी कर सकूं। माला के मोती कविता संग्रह में भी अलग-अलग रंग भरने का प्रयास किया है और उम्मीद है कि यह गुलदस्ता आपको पसन्द आएगा।

पहले काव्य संग्रह के प्रकाशन के बाद मुझे प्रोत्साहित और सबलता प्रदान करने वाले अपने परिवार जनों का धन्यवाद तो करना जरूरी है। अपने लेखन कार्य को लगातार बनाये रखने और समय-समय पर मुझे उल्लेखनीय आत्मीय सहयोग और समर्थन प्रदान करने के लिए तथा साज-सज्जा, आवरण पृष्ठ तैयार करने के लिए सुमित पिलानी का हृदय से आभारी हूं।

अंत में, मैं सभी सहयोग करने वाले, मार्गदर्शन करने वाले व इस नई पारी में उत्साह बढ़ाने वाले सभी महानुभावों का आभार प्रकट करता हूं। आपकी राय मुझे आगे बढ़ने में मदद करेगी, इसलिए सादर आमन्त्रित है।

जगदीश श्योराण

आदर्श कालोनी, गंगवा रोड, हिसार(हरियाणा)





कविता लेखन भी पुरातन काल से चली आ रही एक विधा है जिसके माध्यम से जीवन की विसंगतियां, विकृतियां और असंतोष को प्रकट किया जाता रहा है। रचनाकार अपनी कलम के माध्यम से समाज में फैली अराजकता और खोखलेपन का पोस्टमार्टम करते रहे हैं। यह रचनाकार का अपने मन के भाव और आसपास के परिवेश में सुधार लाने का प्रभावशाली माध्यम भी होता है। नव रचनाकार जगदीश श्योराण जी का यह दूसरा काव्य संग्रह है। इससे पहले उनका पहला काव्य संग्रह कच्ची माटी प्रकाशित हो चुका है। प्रथम काव्य संग्रह से उत्साहित होकर उनकी यह दूसरी पुस्तक अब आपके हाथ में है। माला के मोती में भी उन ने अलग-अलग अंदाज में मनकों की तरह कविताओं को पिरोने का सफल प्रयास किया है।

हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड में सहायक सचिव के पद पर कार्यरत रहे श्री जगदीश श्योराण जी ने 36 वर्षों तक पूरी ईमानदारी से अपनी शिक्षा बोर्ड में देते हुए हर क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान दिया है। उनकी दूसरी पुस्तक के प्रकाशन पर मैं बहुत उत्साहित महसूस कर रहा हूं, जिसकी समीक्षा करने का सौभाग्य मुझे मिल रहा है।

माला के मोती काव्य संग्रह में परम्परागत और साधारण बोल-चाल में प्रयुक्त होने वाले शब्दों का बखूबी प्रयोग किया गया है। उन्होंने इस काव्य संग्रह में घर, परिवार, किसान और नारी शक्ति से सम्बन्धित बिन्दुओं को प्रमुखता से उजागर किया है। उनको किसान का दर्द, उसका कर्ज बहुत उद्धेलित करता है।

जगदीश श्योराण / १

उन्होंने समाज में फैली कुरीतियों, जीर्ण-शीर्ण व्यवस्था पर चोट करने का कोई अवसर हाथ से नहीं जाने दिया है। सपाटबयानी उनके व्यक्तित्व और कृतित्व की विशेषता रही है जो उनकी कविताओं में झलकती है।

संजीदा स्थिति को साधारण और देशज शब्दों में अभिव्यक्त कर देना उनकी खासियत है और ऐसा लगता है कि इसी के बलबूते पर उन्होंने इस विधा में उर्वरा का सृजन किया है। इन कविताओं को पढ़कर ऐसा लगेगा कि यह स्वयं मेरे मन के भाव हैं और कहने और लिखने का अवसर उनको मिल रहा है।

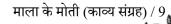
पुस्तक में सबसे पहले उस निर्विकार, निराकार, सर्वशक्तिमान ईश्वर के लिए समर्पण भाव प्रकट किया है कि-

ऐसी शक्ति मुझको देना, गुण गाऊं हरदम तेरे। सारे मन के भ्रम मिटा दे, ओ मालिक सच्चे मेरे।

मैं भी माला का मोती हूं मुझको भी अपनाओ कि पहली कविता अपने शुभचिन्तकों और उत्साहवर्धन करने वालों के लिए सहयोग मांगती है।

साधारण से शब्दों में नारी शक्ति की महिमा और त्याग का बखूबी वर्णन किया है तथा उनके प्रति अपने आदर सत्कार और भावना को जीवन्तता से उजागर किया है-

> जालिम हत्यारों के आगे कब तक हाथ फैलाओगी। करवा कंगना थाल हाथ में लेकर जब वो चलती है। आदमियों की इस दुनिया में भगवान बनाई क्यों औरत। औरत बनकर तुम जी कर तो दिखाओ।



ऐसी बहुत सी कविताएं हैं इस संग्रह में जो इस बात का आभास करवाती हैं कि रचनाकर ने स्वयं और साक्षात उपस्थित होकर इनका अनुभव किया है। लगता है रचनाकार ने मेहनतकश गरीब व्यक्ति की बेबसी को बहत निकट जाकर देखा है-

एक मजदूर कितना जीता है अभावों में। एक दिन फिर आएंगे तेरे शहर को बसाने।

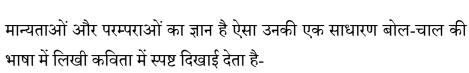
इसी तरह से सखी-सहेली, बहन-बेटी से जुड़ी हुई कई कविताओं के माध्यम से उन्होंने अपने मन के भावों को प्रकट ही नहीं किया है बल्कि यह अहसास भी करवाने का प्रयास किया है कि बदलते जमाने में भी रिश्तों की डोर से बंधे रहना कितना जरूरी है-

मां जाई तो हुई पराई.... मां तू रोईये न, अपना धीरज खोईये न। बेटी मैना दूर की, कर ले मन की बात।

अपनी कविताओं के माध्यम से उन्होंने अव्यवस्था और अराजकता के माहौल का भी बड़े दु:खी मन से वर्णन किया है। संवादहीनता और विरोध को न सुनने का उसे बहुत दर्द है और इसका प्रकटीकरण उन्होंने किसान की पीड़ा से जोड़ कर किया है-

हम चलते जाएंगे, आगे बढ़ते जाएंगे... सम्भाल के रखना अपनी दिल्ली को....

इस काव्य संग्रह में राजनेताओं के महिमामण्डन पर शब्दों के माध्यम से कटाक्ष किया गया है। प्रेम, प्रीत, विरह वेदना से जुड़ी कई कविताओं को काव्य संग्रह में स्थान देकर गागर में सागर भरने का भरपूर प्रयास किया है। उनको गांव की पुरानी



गोधू का ब्याह था और हमनै भी बड़ा चा था।

इस काव्य संग्रह में ऐसी बहुत सी कविताएं हैं जिनको पढ़ने से ऐसा लगेगा कि यह उनके जीवन की भी घटना हो सकती है। उन्होंने हर रिश्ते को बहुत निकट से जीया है और रचनाओं को पढ़ते हुए ऐसा आभास होता है कि उन्होंने स्वयं उपस्थित रहकर वास्तविकता का अहसास करवाया है। वास्तव में यह उनकी जीवनी यात्रा के अलग-अलग आयाम हैं।

पुस्तक का आवरण प्रभावशाली है और लगता है कि यह मेरी और आप सबकी रचनाएं और भावनाएं हैं, पर हम कलम के माध्यम से कह नहीं सके। अलग-अलग रंग और प्रभावशाली ढंग से इन कविता रूपी मोतियों को पिरोने का प्रयास सराहनीय तथा अनुकरणीय है।

ऐसे में शब्दों के रूप में माला तैयार करने के लिए ढेरों-ढेर शुभकामनाएं।

सुमित पिलानी,

देवरोड कॉलोनी, पिलानी





माला के मोती (काव्य संग्रह) / 11

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	अ ाुप्रामाणका शीर्षक	पेज नं-
1.	माला के मोती	16
2.	आजादी का जश्न	17
3.	शुभकामनाएं	20
4.	प्रदेशी की याद	22
5.	औरत	24
6.	गोधू का ब्याह	26
7.	मेरा देश कहां	28
8.	ऐसा पहली बार हुआ	30
9.	सगी बहन	32
10.	तुम्हारा प्यार	34
11.	मां-बेटी	36
12.	चमचों की महिमा	38
13.	नेता जी	40
14.	बिटिया	42
15.	गरीब की जवानी	44
16.	वीरांगना नारी	46
17.	पति प्रेम	48
18.	मजदूर	50
19.	प्रणय निवेदन	52
20.	करवाचौथ – एक समर्पण	54

जगदीश श्योराण / 12

		•
21.	तेरी-मेरी दिवाली	56
22.	अनुपम कृति औरत	58
23.	नारी और संयम	60
24.	प्रणय पीढ़ा	62
25.	समर्पण भाव से काम	64
26.	जीवन की चुनौतियां	66
27.	विश्राम के क्षण	68
28.	सूर्य भगवान	70
29.	मेरे साथी	72
30.	बचपन	74
31.	मेहनत मेरी	76
32.	संघर्ष की राह	78
33.	ललकार	80
34.	बढ़ती उम्र	82
35.	शादी की सालगिरह	84
36.	हकीकत की जिन्दगी	86
37.	जिम्मेदारियां	88
38.	मजदूर की व्यथा	90
39.	मन के भाव	92
40.	पिता का प्रेम	94
41.	मेहनत का भरोसा	96
42.	पत्री उवाच	97
43.	बचपन की यादें	99
		माला के मोती (काव्य संग्रह) / 13 🎝
M _		

	44.	फौलादी इरादे	101
	45.	सर्दी का मौसम	103
	46.	दर्द पराया	105
	47.	बहादुर बेटियां	107
	48.	सच्चा हमसफर	109
	49.	रिश्ते नाते	111
	50.	मन के भाव	113
	51.	साजन मनभावन	115
	52.	प्यार का अधिकार	117
	53.	घर की घुटन	118
	54.	ये जिंदगी क्या है	120
	55.	दूसरे घर में ताकझांक	122
	56.	एक वीर सैनिक	124
	57.	मेरा मीत	126
	58.	पराया दर्द	128
	59.	आंखें	129
	60.	धूप	130
	61.	पथप्रदर्शक	132
	62.	संवादहीनता	134
	63.	बुढ़ापे का शौक	135
	64.	सबसे उत्तम बचपन और जवानी	136
	65.	मेरी सहेली	137
60	66.	पता नहीं चला	139
	67.	हक और अधिकार	141
			जगदीश श्योराण / 14
•	-4 -		- G 40 .

68.	गुजरा हुआ साल	143
69.	सर्दी के दिन-रात	145
70.	पुरानी मुलाकात	147
71.	लेखक परिचय	148







मैं भी माला का मोती हूं, मुझको भी अपनाओ। साथ मुझे भी रहना है, तुम अपना हाथ बढ़ाओ।

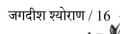
कुछ शब्दों को जोड़-जोड़कर माला एक पिरोना है। एक कहानी पूरी करके फिर नींद चैन की सोना है।

कुछ मनकों को साथ मिला सपना एक संजोना है। इतनी सारी मेहनत है चाहे किसके लिए खिलौना है।

इस माला के मोती हैं तो किसने क्या पहचाना है। पर इसकी हर बात सही है, ये सबको समझाना है। इस भ्रम भरी दुनिया में क्या चांदी क्या सोना है। माला जब ये बनी रहे तो क्या पाना क्या खोना है।

सफर बहुत है लम्बा साथी, आज हंसना कल रोना है। पहली है पायदान देखना, आगे फिर क्या होना है।

रहे कमी तो दोष न देना, मुझको फिर समझाओ। माला के मोती हैं ऐसे, तुम मिलकर गिनते जाओ।





आज 15 अगस्त है, मौज उड़ा ल्यो, दीये जला ल्यो। दसरां नै सुपने बांट के, खुद जीवन में मजे उड़ा ल्यो।

यो देश तो वहीं का वहीं है, इसका कोई नहीं सवेरा। वो ही झोपड़ी, वो ही घर, वो ही पसर्या सा अंधेरा। जैसा दिन पहले होता, जैसी होती रात। उनकी तो बुझी हुई रसोई में, फांका की होवै है बात। कारखानों और मिलों में खून देने के भाषण देने वाले इन, कलयुग के खलनायकां ऊं भी कभी कभार श्रम दान करा ल्यो आज 15 अगस्त है, मौज उड़ा ल्यो।

पहले जहां चूल्हे जलते, रोटी पकती, वहां इब भी भूख रंध है, और रोटियां की जगह आसूं पैके है। आम आदमी कहां खड़ा है, वहां तक ये कब पहुंचे, वो तो फटे कपड़ों से अपना तन ढके है। वो तो अब भी कच्चे में ही खड़ा है और भूखा प्यासा उम्मीद ऊं ज्यादा वजन चके है। अरे नेता जी या 15 अगस्त तो फिर आ गई,

माला के मोती (काव्य संग्रह) / 17



ओढ़ के सफेद टोपी फिर झण्डा फहरा ल्यो।
आज 15 अगस्त है, मौज उड़ा ल्यो।
न जमीन पर, न राम पर न घरां में बसेरा।
न दिन और रात, बस अन्धेरा ही अन्धेरा।
देश अब भी गोरां का, चोर और लुटेरां का।
राजपाठ खत्म है, जो चूसे खून कमेरां का।
हमें गरीबी की सूची में सारां ऊं नीचे ल्या के,
ये निजीकरण का ढोल कूद-कूद के बजा ल्यो।
आज 15 अगस्त है, मौज उड़ा ल्यो

लोकतन्त्र की माला फेरके, ये नेता मक्खन खाण लाग रैया। दाने-दाने के मोहताज, हमनै कुण में लाग रैया। हम भूखा नंगा रहने का रोज रिकार्ड बणानै लाग रैया। हम ताली पिटते रहां और चोर झण्डा फहराण लाग रैया। रोज नया घोटाला करके पाच्छला नै भूला ल्यो। आज 15 अगस्त है, मौज उड़ा ल्यो।

चाहे कोई बम गेरो, चाहे गोली मारोए तन्त्र में दम कोनी।
पहाड़ां में बर्फ से ऊं ज्यादा खून बह गया,
नेताओं नै गम कोनी।
वोट की राजनीति भारी होगी,
ये कोटे की नई बीमारी हो गई।

जगदीश श्योराण / 18

कुछ खा के मर रह्या है, बाकी की कैसे जीवारी होगी। अब जवानों की जिम्मेदारी है, देश नै सोन चिड़ी बनाणै खातर आपस में हाथ मिला ल्यो। आज 15 अगस्त है, मौज उड़ा ल्यो ****



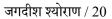
शुभकामनाएं

हम मांगे तेरी खैर सखे, लाखों और हजारों में। ये चमक सदा तेरी बनी रहे, बागों और बहारों में।

ये रोम-रोम से आए सदा, ये रोशन तेरा जहान रहे। दोनों सदा खुशहाल रहो, कायम ये मुस्कान रहे।

सुख चैन मिले भरपूर सखे, चाहे हमसे दूर रहो। रहे दमकता जलाल सदा, खुशियों से भरपूर रहो।

तेरे होठों की हमें मुस्कान सखे, हर पल हमें सुहाती रहे। पथ में कोई बबूल न हो, चाहे दिन कोई रात भी आती रहे।





भड़भागी रहो और साची कहो, ये नूर तेरा आबाद रहे। हर दिल पर सखे, तेरा राज रहे , बस तू सबका सरताज रहे।

ये सपनों का संसार नहीं, दिल की बात बताई है। फूलों में रहो तारों में रहो, सच्ची बात सुनाई है।





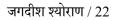
प्रदेशी की याद

ओ चांद के चरखे नीचे आ जा, मैं ऊपर कैसे आंऊगी। तेरे संग में बैठ गली में, गीत सुरीले गाऊंगी।

> मेरे मन की तू जाने है, पर इतनी दूर गया कैसे। पिया मेरे परदेश गए हैं, फिर तुझसे दूर रहे कैसे।

सूत कातती बातें करती, मन मेरा लग जाता था। धागों से मैं ऐसे रमती, दिन मेरा ढल जाता था।

चरखा मेरा चन्दन का, ऐसा सूत बनाया करता। मैं क्या जानूं प्रेम दीवानी, तार-तार समझाया करता।





जोड़ सूत के ऐसे लगते, जैसे जुड़ते दिल के तार। चरखा मेरा कितना प्यारा, देखूं उसको बारम्बार।

डोर प्रेम की बंधी रहे, बस तू तो एक बहाना है। नैनों में वो बसे रहें, वर्ना ये चमन वीराना है।

जब आयेंगे पिया मेरे घर, चरखे की बात बताऊंगी, तेरे संग में बैठ गली में, गीत सुरीले गाऊंगी। ***





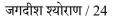
జ[5] జ

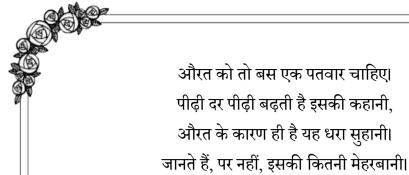
औरत

औरत की सबसे अलग कहानी है। घर हो या खेत सब जगह इसकी मेहरबानी है।

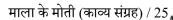
चलना-रुकना और आगे बढ़ना इसे ही आता है। औरत का स्वभाव उसकी नियति को बताता है। वह किसी के लिए कुछ हो, पर देना उसकी नियति है। दूसरों की झोली भरना उसकी प्रकृति है। पहाड़ सा दुःख औरत ही सह सकती है। परिवार और प्यार के लिए चुप रह सकती है। उसे बनाने और पालने का हुनर आता है। औरत के कारण घर मकान बन जाता है।

उसे बहुत पीड़ा परेशानी सहनी आती है। यह उसके आंसुओं की भाषा ही बताती है। औरत तो हलाहल पीकर भी नहीं दिखाती। उसका सफर लम्बा है, इसलिए कुछ नहीं बताती। उसे चाहिए सिर्फ दो मीठे बोल, यही है उसके सफर का मोल। इसे प्यार, श्रद्धा और परिवार चाहिए।





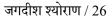
औरत की सबसे अलग कहानी। *****





गोधू का ब्याह

गोधु का ब्याह था, हमने भी बढा चा था। बड़ी मुसकल ते बैण्या था काम। बराती बैणग्या सारा गाम। ख़्शी घणी थी, ले दे के बात बणी थी। ब्याण की त्यारी कर ली। बरातियां खातर लारी कर ली। हम भी होगे तैयार। उसका ब्याह नहीं होणा था बार-बार। हम तो बराती थे, हम कुण से भाती थे। म्हारी के जुम्मेवारी थी। बस पीण की त्यारी थी। चालण की कर ली तैयारी। चौक में आगी लारी। चौधर थी पिवणीयां की। बिना खाये जिवैणिया की। आगी गोधू की सुसराड। फूंक द्यांगे, सिर नै द्यांगे पाड़।

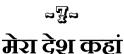




आगले डरगे, मेरै चुगरदे की फिरगे। के होया बात तो बताओ। पहलां गोधू तै तो मिलवाओ। मैं गोधू का यार, कर द्यूंगा आर-पार। इतने में होग्या अन्धेरा। बरसण लागे जूत, पाटग्या बेरा। कोई मेरी सुणैन त्यार कौनी। मेरे बचण का कोई अथियार कौनी। मेरा नशा उतरग्या। मैं बिन आई में मरग्या। या सारी करतूत थी शराब की। जिसने म्हारी हालत खराब की। औड़े म्हारा शराब पीण का कै राह था। क्योंकि वो म्हारे यार गोधू का ब्याह था। ******







भूखे भगत उदास शिवाला। गिर गए मनके टूटी माला। अब तो देखो कृपानिधान। कहां जा रहा मेरा हिन्दुस्तान।

लुटे खजाने नरपितयों के, नेताओं के लगे दरबार। मन्दिर को पुजारी लूटे, जेलों से चलती सरकार। मन्दिर में गीता सूनी मस्जिद में कुरान। अब तो देखो कृपानिधान।

जेलों में मरने वाले, घास की रोटी खाने वाले। देख रहे इनकी करतूतें अपनी जान गंवाने वाले। दोनों आज मर रहे जय जवान और जय किसान। अब तो देखो कृपानिधान।

अंग्रेजी से प्यार हो गया, हिन्दी से परहेज। भारत भारती बात पुरानी, बन गये हम अंग्रेज। सुभाष-गांधी की पीढ़ी मर गई, यहां सूनी हो गई सेज। धर्म जात के नाम पर हम लड़ते हैं भगवान।

जगदीश श्योराण / 28



अब तो देखो कृपानिधान।
पश्चिम का प्रदूषण बढ़ गया, लगे सौंदर्य बाजार।
बर्फ संवेदना हो गई, यहां मच रही हाहाकार।
लोकतन्त्र की ओट में काले धन का व्यापार।
दलदल में हम फंस गए कुछ तो करो निदान।
अब तो देखो कृपानिधान।

याद नहीं करता अब शिवाजी और चौहान को। वीर हकीकत और खुदीराम की उमर नादान को। काला पानी में मरने वाले उन वीरों के बलिदान को। यहां रोज देश में मर रहे, बेकसूर इंसान। अब तो देखो कृपानिधान।

चौराहे पर खड़ी है नारी, क्यों अर्धनग्न हुआ शरीर। यहां बर्फ से ज्यादा खून बह गया, जल रहा कश्मीर। उठो जवानों देश संभालो, खींचों एक नई प्राचीर। वतन के गद्दारों को तुम कर दो लहूलुहान। अब तो देखो कृपानिधान। ****





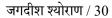
ऐसा पहली बार हुआ

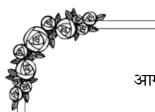
रिश्ते-नाते दीवारों पर सबका बंटाधार हुआ है। लोक दिखावा बढ़ गया इतना नकली सब श्रंगार हुआ है। ऐसा पहली बार हुआ है।

पहाड़ सी पीड़ा हो गई भारी।
टूट रही मर्यादा सारी।
कर्म धर्म से भारी हो गया, दया फिरेगी मारी-मारी।
दुनिया हो गई इतनी छोटी, बहुत दूर परिवार हुआ है।
ऐसा पहली बार हुआ है।

मन की बात रह गई मन में। आज अकेला हो गया जन में। अब गली-गली में राम हो गए, सन्त भूल गए रहना वन में। किस-किस पर अब करें भरोसा, बहुत दूर करतार हुआ है। ऐसा पहली बार हुआ है।

> अमीर-गरीब की बढ़ गई खाई। धर्म जात की बढ़ी लड़ाई।





आग लगी है घर-घर में, ऐसी पश्चिम की हवा है आई। बने सम गोत्र में दूल्हा दुल्हन, खत्म पुराना संस्कार हुआ है। ऐसा पहली बार हुआ है।

महंगाई ने किया कमाल। पचास की चीनी सौ की दाल। अब देश की चिन्ता कौन करेगा, नेता सारे बने दलाल। बेबस जनता क्या करे अब इतना बेराजगार हुआ है। ऐसा पहली बार हुआ है।

दुश्मन से हाथ मिलाते हैं।
खुद घर में आग लगाते हैं।
देश बिके चाहे चौदह बार, ये चैन की बंसी बजाते हैं।
खाली ब्यानों के बाण चलाये, ऐसा ये सरदार हुआ है।
ऐसा पहली बार हुआ है।



माला के मोती (काव्य संग्रह) / 31



a@a

सगी बहन

मां जाई तो हुई पराई आती नहीं बुलाने से। न जाने क्या हुआ है ऐसा लगते हैं बेगाने से।

> जब से घर को छोड़ा है। उस घर से नाता जोड़ा है। न जाने वो क्यों नहीं आती, क्यों हमसे मुंह मोड़ा है।

न कोई झगड़ा न कोई बात। आती नहीं क्या मां की याद। कैसे गुड़िया को समझाएं, किससे करे अब वाद-विवाद।

तू सबको क्यों भूल गई है। ऐसा क्या कोई कमी रही है। तेरा छोटा लाडला भाई, पूछे ऐसी क्या बात हुई है।





तू अपने में मगन हो गई। चिन्ता में मां आधी हो गई। पीहर को तू छोड़ के बहना, सुसराल में अब ऐसी खो गई। तू जाकर वापिस आई न। कभी कोई बात बताई न। धन पराया तो होती बहनें, पर इतनी भी रुसवाई न।

फले-फूले तेरा परिवार। पर यहां भी है तेरा इंतजार। कुछ इनका भी करती ध्यान, कोई चिट्ठी या कर दे तार।

अब एक बार मिलने को आना, सारा हमको हाल सुनाना। इस घर में भी रौनक होगी, मत करना तू कोई बहाना।

सारा कुछ तू जान गई अब क्या होगा समझाने से। ये ऐसे ही जाती हैं, हम हो जाते अनजाने से।



माला के मोती (काव्य संग्रह) / 33



သ^{ည့်}ကြသ

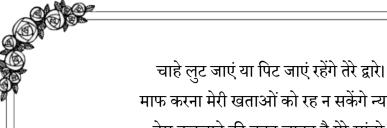
तुम्हारा प्यार

हमने कब मांगे हैं तुझसे लाख-हजार। नहीं मांगे कभी दौलत के भण्डार। बस एक चीज ही मांगी है तुझसे बार-बार। इस झूठी दुनिया की शानो-शौकत नहीं चाहिए, बस मांगा है सिर्फ तेरा प्यार।

जब तेरे हाथ में मेरी जिन्दगी का लेखा। मैंने तो सबको खाली हाथ जाते देखा। तेरी दुनिया के नाटक में किरदार मेरा क्या है, तो बता मौला मेरा यहां क्या रखा।

तुझसे अब प्रीत का नाता जोड़ लिया है। इस बनावटी दुनिया से नाता तोड़ लिया है। कुछ फर्क नहीं पड़ता ऐ दुनिया जहां के मालिक, हमने भी इस रंगभरी दुनिया को छोड़ दिया है।





चाहे लुट जाएं या पिट जाएं रहेगे तेरे द्वारे। माफ करना मेरी खताओं को रह न सकेंगे न्यारे। तेरा कहलाने की बहुत चाहत है मेरे सांवरे, तू तो बिना कहे ही मेरे सब काम संवारे। हम यूं करते रहेंगे तेरा इंतजार। हमने कब मांगे हैं तुझसे लाख-हजार।



माला के मोती (काव्य संग्रह) / 35





मां तू रोइये न, अपना धीरज खोइये न। दुःख सै मेरे जन्म के साथी, तू इन आंखां ने खोइये न।

जब मैं जामी थी मेरा बापू रोया था। कोई खुश न था, जाणु सब कुछ खोया था। मैं भाई तै पहल्यां आई, पर मेरा दर्जा छोटा था। सब नै सब तै ज्यादा चाहूं पर मेरे सुख का टोटा था। यो दुःख मोटा था, और फूल तू बोईये न। मां तू रोइये नां,

तेरे काम में हाथ बंटा के, फेर स्कूल में जाया करती। सुण-सुण ताने घर आल्यां के, आसुंआं में नहाया करती। तैने गाम गुहांड़ में जाणा पैड़े तो मैं सारा काम करैया करती। कदै अणजाणे में गलती होज्या, मैं छोटे भाई तै भी डरया करती। मैं किसका बुरा करया करती, तू नैन नीर तै धोईये न। मां तू रोइये न,



जगदीश श्योराण / 36



स्कूल भेज के बीच में ठाली, मैं भीतर बड़ के रोई। चौका-चूल्हा करूं बराबर, मेरी किसी दुर्गति होई। अनपढ़ के मैं गेल बांध दी, मैं कदे न सुख तै सोई। सास नणद मैंने खाण नै आवै, मेरी रे रे माटी होई। अड़ै मेरी सुणै न कोई, घणी दुःखी तू होइये न। मां तू रोइये न.

वार-त्यौहार मैंने याद कर लिए, तावल कर कै आऊंगी। सासरे के दुःख भूल के, तेरे घर की शान बढाऊंगी। तीज दीवाली, होली पै मां मेरे याद बहुत तू आवैगी। तेरे सिर का ताज, तेरे घर की लाज, क्यूकर मैंने भुलावैगी। तू सबतै ज्यादा च्हावैगी, बेचैन घणी तू होइये न। मां तू रोइये न,

फटे सिलण्डर मैं मर जाऊं, मेरे दुःख का कोई पार नहीं। नम कै बट्टा लागण न दूं तेरी बेटी बेऐतबार नहीं। मर जाऊं चाहे रहूं जिंवति, तू अपणे दिल ने थाम लिए। मेरे भाई की बहू ने तू बेटी समझ के काम लिए। बात मेरी तू मान लिए, घणी दुःखी तू होइये न। मां तू रोइये न,







चमचों का बेड़ा गरक, ये हो गई बात पुरानी। इनकी माया अजब है, इनका न कोई सानी।

आगे-पीछे घूमते इनके नम्बर सौ। रात को ये दिन कहें फिर बेड़ा गरक क्यों हो। बेड़ा गरक क्यों हो गीत ऐसे गाते हैं, बिना कर्म के सबसे ज्यादा फल पाते हैं।

इनके मुख पर खेलती, सदा कुटिल मुस्कान। इनका कोई क्या करे, इनसे डरता है भगवान। इनसे डरता है भगवान, करे क्या वो बेचारा। इनके आगे नहीं चले उसका भी चारा।

इनकी चिकनी बातों पर सब करते विश्वास। आम आम ही रह गए, ये हरदम रहते खास। ये हरदम रहते खास, बिना कुछ काम करे। ले डूबेंगे नैया को भी भला अब राम करे।





इनकी तीखी नजर का लग जाये जब तीर। घायल होकर गिर पड़े बड़े-बड़े बलबीर। बड़े-बड़े बलबीर पड़े हैं अब बेचारे। इनसे पंगा लेकर फिरोगे मारे-मारे।

चमचों की सीमा नहीं, कर जाते हद पार। अपना काम करते नहीं, देते सलाह हजार। देते सलाह हजार, तोड़कर सारे बन्धन। रहें बॉस के खास करो सब इनका वन्दन।

चमचों का अब राज है, चमचों का संसार। इनके गाओ गीत करो सब इनकी जय-जयकार। करो सब इनकी जय-जयकार, साथ हरदम पाओगे। ये ढूंढे से नहीं मिलेंगे, ढूंढते रह जाओगे।

दर्पण रखकर सामने, खुद अपने को नाप। कितनों के तुम बाद हो कहां खड़े हो आप। कहां खड़े हो आप, शर्म को करो किनारे। बिना श्रम के मुफ्त मिले, इनाम ये प्यारे।





्रशुश्च नेता जी

मैं नेता हूं मेरी कोई जात नहीं। मैं क्या करता हूं मेरी कोई बात नहीं।

मुझे सब जानते हैं, मेरी सब मानते हैं। चलता है मेरी मर्जी से सारा काम। करे चाहे कोई होता है मेरा ही नाम। मैं सबका मीत, मुझे सबसे प्रीत। ईमानदारी मेरे खून में समाई है। भ्रष्टाचार से तो मेरी जन्मजात लडाई है। धन-दौलत से कोई प्यार नहीं, मेरा कोई व्यापार नहीं। धर्म के ठेकेदारों से लड़ता हूं। लेकिन बिन आई में नहीं मरता हं। मुझे पल-पल की खबर, हर खबर पर नजर। खुन बहाया है शहीदों में नाम आता है। किसने देखा किसने सुना, अपना क्या जाता है। मेरा कोई जवाब नहीं, मेरा कोई हिसाब नहीं। देश के दुश्मन मुझसे जलते हैं। अपराधी तो मेरी जेबों में पलते हैं।





रिकार्ड मेरा खराब नहीं, किसी में मेरा हाथ नहीं। भाषण खूब देता हूं, बदले में केवल वोट लेता हूं। जरूरत पड़ने पर नोट भी देता हूं। जीतने के बाद कुर्ता और कोट भी लेता हूं।

मैं क्या करता हूं, मेरी कोई बात नहीं।









बेटी मैना दूर की, कर ले मन की बात। जाने कब वो छोड़ चले अपने बाबुल का साथ।

बेटी नाजुक फूल है, रखना इसका ध्यान। कांटों की मालाओं से, वो हो न लहूल्हान।

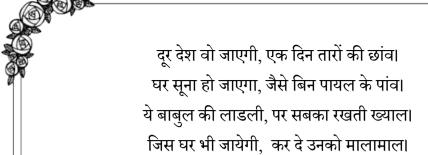
बेटी भाग्य मां-बाप का कर दे घर को निहाल। एक दिन वो चली जाएगी, तज पीहर की डाल।

बेटी की खुशबू से महके घर का कोना-कोना। तुलसी है आंगन अपने की सुन्दर एक खिलौना।

बेटी बोले, रस घोले, कोयल की मिठास। जिस घर जाये राज करे फैले उसका प्रकाश।

बेटी सूरज-चांद है, बेटी की क्या बात। बिन बेटी सूनी ये बिगया क्या ब्याह क्या बारात।





बेटी चाहे कहीं रहें, किसी देश परदेश। उसको ढलना आता है, जहां का जैसा भेष। ******







मैं गरीब की जवानी हूं, मेरे घर मत आना। यहां तो ऐसे ही चलेगा, देख दूसरा ठिकाना।

पैदा होते ही मुश्किलों में जीना पड़ता है। अवसर को अभावों में बदलना पड़ता है। चाह नहीं है महलों की तरफ देखती रहूं, कुछ नहीं यहां तो ऐसे ही जीना पड़ता है।

बचपन से जवानी का कुछ पता ही नहीं। कहां तक जाना है यह तो देखा ही नहीं। पसीना-पसीना होकर भी फुरसत कहां है, किसे अवकाश है खेलने का हमने तो सुना ही नहीं।

धुंए की चादर ओढ़कर हर पल जलती रही। सूरज की परछाई पर मैं दिनभर चलती रही। कब जवानी मुड़ गई फिर बुढ़ापे की डगर, मैं अड़ी हर राह में, पर अन्दर से पिघलती रही।





घुटन जीतनी होगी, ये आग उतनी बढ़ेगी। ये गरीबी आखिर मुझे कब तक ठगेगी। मुझे लिखना है श्रम का एक इतिहास, देखे ये आग कब तक सर पर चढेगी।

अपने ही दम पर निर्माण करना है। किसी के बिना सहारे आगे बढ़ना है। अपने हाथों से अपनी कहानी लिखूंगी, प्रगति की राह पर मुझे भी चलना है।

कैसा होता है बचपन, जवानी मुझे भी बताना। निराशा में भी आशा का एक दीपक जलाना। ****





ूर्रीक्रिन्न वीरांगना नारी

जालिम हत्यारों से आखिर कब तक यूं बच पाओगी। रणक्षेत्र में हाथ बांधकर फिर किसको मुंह दिखाओगी।

> मत रखना उम्मीद दामिनी. लड़ना होगा तुझे अकेले। पग-पग पर यहां बहेलिए, कितने मिलेंगे तुझे झमेले। तुम निडर थी अब डर कैसा कोई इस आग से न खेले। ये वहशी पापी क्या जाने. नारी मन की चिंगारी को। खड़ग उठा लो आगे बढ़कर, छोडो अब किलकारी को। घ्ट-घ्टकर मरना क्या जीना, रोज-रोज अब सहन न होगा. जालिम तेरे हर गुनाह का अब रण में ही फैसला होगा। ले दुर्गा का रूप दामिनी, एक बार फिर आ जाओ।



ले समसीर हाथ अपने में, उनकी खोज मिटा जाओ।

पापियों और दुराचारियों का कर दो काम तमाम। तेरे आंचल को जो छुए, अब लो ऐसा इंतकाम। ****



≈ीुगु≈ पति प्रेम

सोचा थोड़ा तड़फाऊं उनको, बदल के ढंग दिखाऊं उनको।

लेकर किसी दूसरे का नाम, आज तो खूब जलाऊं उनको। ये चांद-तारे तो बहाने हैं, कब तक ऐसे बनाऊं उनको।

मेरा उनका बन्धन ऐसा है, पर कैसे यकीन दिलाऊं उनको। मुझे अलग दिखने का शौक नहीं, पर ये बात कैसे समझाऊं उनको।

देखें आखिर कब तक चलेगा, मन करता है खूब सताऊं उनको। ये उनकी नादानी है या कुछ और, कब तक यूं ही समझाऊं उनको।





आज हम इस मोड़ पर आ गए, अब कैसे दूर हटाऊं उनको। रूठने-मनाने का भी मजा है, तभी तो रोज हंसाऊं उनको।

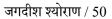
उनके रूठने का ढंग निराला है, हर त्यौहार से पहले मनाऊं उनको। ****



သ႑ို္င္သြား

मजदूर

मजदूर सबसे दूर, होता है कितना मजबूर। विकास उसे छलता है उसका बचपन अभावों में पलता है। भूख उसे मारती नहीं किस्मत भाग्य संवारती नहीं। उसे किसी का डर नहीं महल उसका घर नहीं फाके रखकर भी जीता है। पता नहीं कहां-कहां सबर की घूंट पीता है। झोपड़ी से शुरू होकर बस यहीं का रह जाता होकर। एक नई उम्मीद मन में लेकर हर दिन अपनी मेहनत देकर दूसरों के लिए सब कुछ करता है। मजदूर जो ठहरा तो ही तो मरता है। थोड़े में ही खुशी सांझा कर लेता है। हड्डियों को गलाकर भी जी लेता है। खुशियां तो उसके घर भी होती हैं।





पर इसे देखने वाली आंखें कम होती हैं। फिर भी किसी को दोष नहीं देता है। मेहनत करके ही शाम को कुछ लेता है। कोई उसे क्या नाम दे इससे बेखबर। श्रम करने में खुश इसमें ही उसे सबर।

मजदूर कभी अपने को मजबूर नहीं मानता। पसीना बहाकर आगे बढ़ने का रास्ता वही जानता। *****







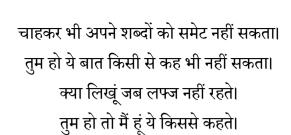
मन करता है तुझ पर भी कविता लिखूं। पर तुम तो पहले ही परिपूर्ण हो।

कल-कल बहते झरने सी लगती हो। नजरों से दूर भी कितनी पास दिखती हो। आंखें भीगे तो नजारे बहक जाते हैं। क्या लिखूं कविता शब्द ठहर जाते हैं।

तेरी पलकें जो झुकें तो चलना रुक जाये। तेरी नजरें अगर उठें तो जहां भी थम जाये। तुम रात में चांदनी सी दिखती हो। मस्त नदिया की धार सी लगती हो।

क्या लिखूं कविता, कलम भी नहीं मानती। उछलती-कूदती हो पर कुछ नहीं जानती। तुम्हीं मेरे जीवन में रंग भरती हो। दिल के करीब से हर बार गुजरती हो।





कविता तूने जीने का नया ढंग बता दिया। देख अब तो तूने मुझे भी लिखना सिखा दिया। ******





≈शु⊕≈ करवाचौथ-एक समर्पण

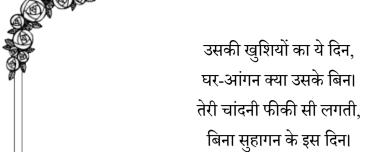
करवा कंगना, थाल हाथ में लेकर जब वो चलती है। पांव की पायल, कान की बाली दोनों संग-संग बजती है।

> एक साल में ये दिन आता है। इससे उसका गहरा नाता है। लाल सुर्ख जोड़े को सजकर, मन भाव विभोर हो जाता है।

अनन्त भावों को मन में लेकर। स्नेह वीणा सी दिखती अक्सर। रोम-रोम पुलकित हो जाता, सौदर्य की मूर्ति सी बनकर।

छम-छम सारा दिन रहता है। उसका मन ऐसा कहता है। सदा सुहागन बनी रहूं मैं, ये सात जन्म का नाता है।





अपने साजन के घर आकर औरत कितनी बदलती है। व्रत-त्यौहार के सारे बन्धन, सब साजन खातिर करती है। ******









सोचा एक कविता लिखूं तेरी इस दिवाली पर। तेरे आंगन की खुशियां और मेरी इस तंगहाली पर।

तेरे घर का कोना-कोना कितना रोशन लगता है। मेरे घर में फाके हैं फिर भी सबकुछ चलता है। तुम चाहे जितना ऊंचे उड़ना पर हंसना नहीं कंगाली पर। सोचा एक कविता लिखूं तेरी इस दिवाली पर।

रंग-बिरंगे फूलों जैसी कितनी सुन्दर दिखती है। लाल सुर्ख इन चेहरों पर हंसी भी कितनी खिलती है। चाहे बांटो या न बांटो पर मत इतराना लाली पर। सोचा एक कविता लिखुं तेरी इस दिवाली पर।

कैसा ये त्यौहार है यारों सबके अलग नजारे हैं। एक घर में आदमी थोड़े दूजे में कितने सारे हैं। कोई थोड़े में खुश है और कोई दुःखी रहे खुशहाली पर। सोचा एक कविता लिखूं तेरी इस दिवाली पर।



तेरे महलों के आगे एक छोटा सा घर मेरा है। वहां खनक दिखती पैसा से यहां कंगाली का डेरा है। तेरी दिवाली तुझे मुबारक न हंसना गरीब की थाली पर। सोचा एक कविता लिखूं तेरी इस दिवाली पर। ****







आदिमयों की इस दुनिया में भगवान ने बनाई क्यों औरत। बराबर का हकदार नहीं तो अलग दिखाई क्यों औरत।

> कौमल तन और मन दिया है। उसने ही क्यों गरल पिया है। फिर मिलता क्यों सम्मान नहीं. उसने भी यहां जन्म लिया है।

तेरी कृति कितनी प्यारी है। लगती सबसे ये न्यारी है। दर्द छिपाकर अपने सीने में, अब भी इसकी जंग जारी है।

औरत सबका पोषण करती अलग नहीं कुछ उसकी हस्ती। कहने को आधी दुनिया पर, पुरुष के आगे कुछ नहीं चलती।



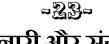


व्रत-त्यौहार उसके लिए बने हैं सारे संस्कार उसके लिए बने हैं पुरुष तो बस हक जमाने के लिए, औरत के रास्ते कठिन घने हैं।

सुन्दरता और कोमलता देकर इतनी सजाई क्यों औरत। जब पीड़ा-दर्द इसके हिस्से, हर बार रुलाई क्यों औरत। ******









सोचा एक कहानी लिख दें, तेरे मन के भावों पर। कितने छाले और सहोगे, इन पथरीली राहों पर।

> इतना संयम और समाई. जाने कहां से लेकर आई रिश्ते-नातों के बन्धन में. छोड़ दूसरे घर में आई। किसे कहें मन की बातें. सिर रखकर आज भुजाओं पर।

तूने मकान को घर बनाया। लगता नहीं अब तुझे पराया। बस दो मीठे बोलों के बदले. तूने अपना दर्द छुपाया। तन-मन चाहे घायल हो. पर जाना नहीं उन घावों पर।

कितनी तेरी सुनते हैं सब, ये उनको कहती है तू कब।





मोम सी गुड़िया मौन हो गई, बिना बात के कहते हैं जब। सफर चाहे हो कितना लम्बा, इस बिन पतवार की नाव पर।

आंख के आंसू कह जाते हैं। जब ये लाडले बह जाते हैं सीने पर पत्थर रखकर फिर, जख्म नया सह जाते हैं। बिन मंजिल आराम नहीं, रख भरोसा अपने पांव पर।







अब तुम कैसे रहते होगे, मुझको ये भी ज्ञात नहीं। कितनी दूर ठिकाना है, और मुझसे कोई बात नहीं।

किसने वो दिन छीन लिए हैं बिन तेरे हम कैसे जिए हैं वो बचपन की आंख मिचौली, कुछ तो कहो क्यों होंठ सिए हैं।

करता है ये कौन बिछौड़े, अच्छे दिन थे इतने थोड़े। दूर बसा ली अपनी दुनिया, क्यों गांव गली थे हमने छोड़े।

खालीपन कितना लगता है। मिलने को तो मन करता है।





कैसे तुझको बात बताएं, मन मेरा इतना डरता है। उस बचपन को करना याद। कितना होता वाद-विवाद। सूनी गलियां आज बुलाती, सुन लो दिल की ये फरियाद।





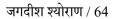
समर्पण भाव से काम

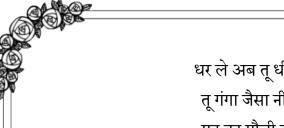
तू लिख दे उसका नाम कबीरा, जो करते इतना काम कबीरा, पर्दे के पीछे रहकर भी, न लेते कोई दाम कबीरा।

कितना अच्छा लगता होगा, तुझको कौन समझता होगा, अपने भाव समेट लिए हैं, दिल पर पत्थर धरता होगा।

किसको भाव बताएं अपने, टूट रहे हैं क्यों सारे सपने, मन की बात रह गई मन में, भूल गए लगता है हंसने।

चुप रहकर सब सुन लेता है श्रम करे, फिर दम लेता है तेरी मेहनत बे अनमोल, खुद का नाम कहां देता है।





धर ले अब तू धीर कबीरा, तू गंगा जैसा नीर कबीरा मन का मौजी बनके रह, क्यों होता अधीर कबीरा।





जीवन के सफर में चुनौतियां कब कम थीं। हौंसलों के आगे ये हमेशा बेदम थीं।

आगे बढ़ने के लिए खुद से ही लड़ना पड़ता है, सैकड़ों बाधाओं को पार करके आगे बढ़ना पड़ता है। कई बार राहों के कांटों ने घायल भी किया है पर मंजिल को पाना है तो सब्र का घूंट भी पिया है। बाधाओं को देखकर आंसू भी निकल आते हैं जिन्दगी, पर हर बार हम सम्भल जाते हैं हारना नहीं है, ये भी दृढ़ इरादा है कई बार वक्त भी बहुत मजबूत बनाता है। पर चुनौतियां रास्ते में बार- बार आती हैं। जो लड़ना ही नहीं आगे बढ़ना भी सिखाती हैं। अब लगता है चाहे हम कुछ भी करें। बाधाओं और विपदाओं से क्यों डरें। परेशानियां और बाधाएं जीवन का अंग हैं। जीना है तो ये सब रहती अपने संग हैं।



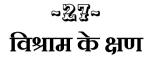


फिर इनसे डरकर क्या रह पाएंगे। आखिर इन को छोड़ कर कहां जाएंगे। हिम्मत से हर समस्या का सामना करना है। हौंसलों के साथ ही अब आगे बढ़ना है।

जब जीना है तो चुनौतियां हर पथ पर आएंगी। देख लेना हिम्मत के आगे ये भी थक जाएंगी। ******







अब विश्राम करना है, दूर जाना छोड़ दिया है। इस सफर में थक न जाऊं, इसलिए नये लोगों से रिश्ता जोड़ लिया है।

इन दूरियों ने फासले भी बढ़ा दिए हैं कहने और सुनने को नये दोस्त बना लिए हैं। ये फासले भी तो कई बार दूरी बढ़ा देते हैं। अक्सर अकेला रहना भी सिखा देते हैं। पर ये भी नहीं है कि मैंने उनसे मिलना छोड़ दिया है। वक्त कुछ ऐसा आया कि रास्ता ही मोड़ दिया है।

कई बार अकेला होने का अहसास भी होता है। चलना है इस सफर में, कोई खास भी होता है। उनके लिए जिए ही नहीं, इनको भी साथ चाहिए। कैसे कहूं मुझे पुराने दोस्तों से ही मुलाकात चाहिए।



कई बार अकेलेपन का अहसास भी होता है।

उनके निकट न होने का आभास भी होता है।

पर समय के अनुसार एक बदलाव हो रहा है।

पुराने रिश्तों में कुछ ठहराव हो रहा है।

मैं उनको याद तो करता हूं,

अब पुराना ठिकाना छोड़ दिया है।

उनकी चिन्ता और परवाह कितनी है ये बताना छोड़ दिया है।





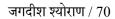
निकलो न अब सूरज दादा, सर्दी में हो गया है आधा। रंग-ढंग सारे बदल गए हैं.

छुपकर रहता है कुछ ज्यादा। करते तेरा सब इंतजार,

बच्चे-बूढ़े और बीमार। तेरा चेहरा बेनूर सा दिखे, सुनता नहीं क्यों मेरी पुकार।

देरी से क्या तुझे मिलेगा, देख तुझे ये शहर खिलेगा। आज तुझे तो आना होगा, गर्मी में तो खूब जलेगा।

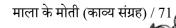
किट-किट करते बजते दांत, सर्दी में जम जाते हाथ। गरमा-गरम जलेबी के संग, दूध के प्याले आते याद।





रोम-रोम कंप जाता है, पानी भी जम जाता है। छुपकर रजाई में सोना, तब याद फिर मायका आता है।

दिन चढ़े भी रहे अन्धेरा, चारों तरफ है घना कोहरा। सूरज दादा बात मान लो, कर दो कुछ जल्दी सवेरा। ***









बिना गिने प्रतीक्षा कर ले, सौ जन्मों को सिर पर धर ले। तुम आने की आस जगा दो। मुझको तुम इतना समझा दो।

तारे गिन-गिन रात गुजारू। पलकों से मैं शूल बुहारू। भंवरों पर पहरा बिठला दूं। कलियों को ये बात सुना दूं। फूलों का खिलना रुकवा दूं। बस मुझको यकीन दिला दो।

सूरज पर पहरा बिठवा दूं। बादल की दीवार बना दूं। तारों का चलना रुकवा दूं। काया का रंगीन दुशाला, राह तकेगा ये मतवाला, तुम आने की रात बता दो। युग गिन लूं मैं बांह पसारे।



निंदिया को मैं करूं किनारे। जब आओगे पास हमारे। बाट निहारूं प्राणों प्यारी। सांसों से जीवन नहीं भारी। चाहे मुझको कुछ भी बना दो।





बचपन

शाम ढले आसमान तले कितना आज अकेला हूं। फुरसत के लम्हों में बचपन ढूंढने निकला हूं।

> दुनिया के दुख-दर्द सब बेगाने थे। बचपन में हम भी कितने मस्ताने थे। न फिकर न चिंता करते थे न किसी से डरते थे। अपनी अलग ही दुनिया होती थी। परेशानियां दूसरे के घर सोती थीं।

सभी घर अपने होते थे। पता नहीं हम कहां-कहां सोते थे। मोहल्ले की गलियां भी बेगानी नहीं थीं। किसी से कोई परेशानी नहीं थी। बचपन की वो नादानियां याद आती हैं। वो पेड़ों की डालियां आज भी बुलाती हैं।





कहां वो गलियां और वो चौबारे। वो साथी जो आज मुझे पुकारे। बचपन की वो प्यारी-प्यारी बातें। वो नानी-दादी की कहानियों की रातें।

जब भी उन दिनों की याद आती है।
फिर पुरानी स्मृतियां मुझे बुलाती हैं।
मोहल्ले के लोग कितने नाम से बुलाते थे।
वो कितना अपनापन दिखाते थे।
पुराने नाम आज याद ही नहीं रहे।
शायद वो बुलाने वाले भी कहीं गए।
यूं ही खेल-खेल में बड़े हो गए।
बीत गया बचपन हम भी खो गए।

मेरे बचपन की ये दुनिया बहुत रंगीली है। ये परेशानियों और दर्द की शाम अकेली है।









नींद की मदिरा न छिड़को अब मुझे सोना नहीं है। मुश्किलों से जो मिला है, अब उसे खोना नहीं है।

धुंए की चादर लपेटे, हर घड़ी जलता रहा हूं। मैं श्रम की राह पर दिन-रात चलता रहा हूं। इस समय के पृष्ठ पर कहानियां लिखता रहा हूं। मैं अकेला भीड़ में अलग सा दिखता रहा हूं।

है जिन्हें अवकाश खेलें वो खिलौना मानकर। पर न समझे मैं थका हूं एक अकेला जानकर। शौक हो जिसे जिएं वो परछाइयों की आड़ लेकर। जो किया है खुद किया है, अपना ही पसीना देकर।

रुक गया तो लोग समझें, यहां हार मैंने मान ली। काम करने का जनून है, मन अपने में ठान ली। जिन्दगी आखिर कहां तक सब्र का इम्तिहान लेगी। है भरोसा इतना खुद पर, दुनिया एक दिन मान लेगी।





घुटन जितनी भी अधिक हो आंच उतनी ही बढ़ेगी। रूढ़ियों की राख कब तक आंच के सर पर चढ़ेगी। एक दिन ये मान लेना, मैं उजाले की निशानी हूं। अब मुझे फुरसत कहां है, मैं खुद की ही कहानी हूं।

जान लो और मान लो अब भाग्य पर रोना नहीं है। चल पड़े हैं राह पर तो वापिस अब होना नहीं है। ******







हम चलते जाएंगे, आगे बढ़ते जाएंगे। अपने हकों के संघर्ष को, और पक्का करते जाएंगे।

> देख बाधाओं को राहों में फिर भी नहीं डरना। पानी की बौछारों से ऊफ तक नहीं करना। हर बैरिकेट को पार, हम करते जाएंगे हम चलते जाएंगे।

हम कभी न झुकेंगे हम कभी न मिटेंगे जोरो जुल्म से डरकर वापिस नहीं जाएंगे। अब तेरी दिल्ली को, अपनी ताकत दिखाएंगे।



जगदीश श्योराण / 78



चाहे कितने कांटे बिछवा दो, कितनी तुम दीवार बना दो, हक की एक लड़ाई है तो, चाहो तो सूली चढ़वा दो। तेरे कांटों को भी फूल बनाएंगे, तुझको बार-बार समझाएंगे।

हमको बरसों से छल रहे हो, अब हमारी ताकत से जल रहे हो, हमको तेरा सुख-वैभव नहीं लेना, तो क्यों आड़े-तिरछे चल रहे हो। अब तुझको भी औकात बताएंगे। एक नया सवेरा हम लाएंगे। ****



~ **BB** &

ललकार

सम्भाल के रखना दिल्ली को पर सम्भाल नहीं पाओगे। यूं ही दीवारें खड़ी करके आखिर इसे कब तक बचाओगे।

ये तब तक ही बचेगी, जब तक किसान रखवाले हैं। सत्ता बचाने के लिए, तूने कितने गद्दार पाले हैं। इतिहास ऊठा लो हमने हर बार इसे बचाया है। जब भी जरूरत पड़ी तो मेरा बेटा ही आगे आया है।

अगर हम बदल गए तो तू बचा नहीं सकता। लाठी और गोलियां तो तू खा नहीं सकता। बन्द कमरों में भाषण देने से कुछ नहीं होगा। ये गरूर तुझे एक दिन ऐसे ही खो देगा।

किसानों को दिल्ली आने का शौक नहीं है। उसे किसी की कुर्सी कब्जाने का शौक नहीं है। जिसे बोना आता है वह काट भी सकता है। ये किसान है न झुकता और न रुकता है।



जगदीश श्योराण / 80

अभी वक्त है सम्भल जाओ किसान की मान लो। बिना देर किए इसकी ताकत को पहचान लो। ये मुट्टी भर लुटेरे दिल्ली को बचा नहीं पाएंगे। किसान और जवान इसे बचाने के लिए जान पर खेल जाएंगे।





उमर के आगे कुछ फीका हो गया। पहले सी बातों का रंग खो गया।

आंखों के सपने कम होने लगे हैं। खुशियों में भी अब रोने लगे हैं। पता नहीं क्यों सूना सा लगता है। लोगों की भीड़ से भी डर लगता है।

अब रूठने वाले को मनाना भी नहीं आता। अपने दर्द को अब बताना भी नहीं आता। लगता है कुछ खो सा गया है। सोचता हूं ये क्या हो गया है।

ये जिन्दगी के मेले अब सुहाते नहीं। चांदनी को देखकर पहले से मुस्कुराते नहीं। कौन है जो इसको बदल रहा है। दिन के उजाले को निगल रहा है।





ये अन्धेरा मुझे डराने लगा है। अकेलापन मुझे सताने लगा है। जिन्दगी कुछ तो बता इसका राज क्या है। आखिर इस बढ़ती उमर का इलाज क्या है।

मेरा सफर काफी है अभी थक जाना नहीं है। उमर के इस पड़ाव पर भी रुक जाना नहीं है। ****







≈ |लिगरह

एक-दूजे के संग साल बिताये। आज बधाई देते ये मन हर्षाये।

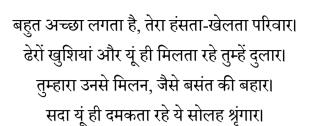
पहले कितने अनजाने थे। फिर एक-दूजे के दीवाने थे। अब अनूठा है आपका जीने का अंदाज। खुशियों के दामन में छलकता रहे सांझ।

खुशी और गम का मिलकर किया सामना। पच्चीस साल में कितनी मिलने लगी भावना। दूसरों की खुशियों में रहने नहीं देते कमी। कभी न आये तुम्हारी जिन्दगी में कोई नमी।

फूलों की खुशबू से ये बिगया महकती रहे। हर घड़ी हर पल ये गुड़िया चहकती रहे। ये चांद और चकोर सा प्यार हमेशा बना रहे। खुशियों के फूलों से आपका दामन सदा भरा रहे।



जगदीश श्योराण / 84



तुम्हारी जोड़ी यूं ही बनी रहे। सौ सालों तक यूं सजी रहे। *****







...... स्वर्ग का शामकेट में सादा से आगा।

कभी इस भागदौड़ से बाहर तो आना। कितना हसीन लगता तब तेरा मुस्कुराना।

इस ख्वाबों की दुनिया को छोड़ तो सही। जिन्दगी क्या है हकीकत से जोड़ तो सही। ये हवा से सपने सभी सच्चे नहीं होते। ज्यादा ख्वाबों में रहने वाले अच्छे नहीं होते।

जब ये टूटते हैं तो, हौंसला भी टूट जाता है। दर्द दिल का आंखों से छलक जाता है। उम्र भर के लिए नया फसाना हो जाता है। तो हंसने के लिए तैयार जमाना हो जाता है।

खुद पर भरोसा है तो एक दिन अजमाना। अगर हकीकत में रहोगे तो न पड़ेगा पछताना। जिन्दगी हसीन है, इसे हौंसलों से जी ले। ख्वाबों को छोड़कर, अब हकीकत में जी ले।



जगदीश श्योराण / 86



ये आडम्बर लम्बे वक्त के साथी नहीं होते। परेशानी में साथ देने के हिमायती नहीं होते। जमीन से जुड़कर रहोगे तो अलग मजा है। वर्ना तो एक दिन लगेगा यह जीवन ही सजा है।

चैन से रहने और जीने की आदत डाल लो। हवाई बातों से अपने को बाहर निकाल लो। ये जिन्दगी जीते जी स्वर्ग बन जाएगी। बिना मांगे ही खुशी तुम्हारे पास आएगी। ***







कुछ भी कहे ये दुनिया, जिम्मेदारी से काम कर। बाद में कौन पूछता है,

कहीं तो अपना नाम कर।

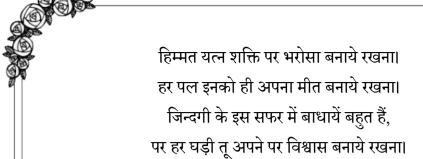
ये मौसम तो यूं ही बदलता रहेगा। सफर जिन्दगी का भी चलता रहेगा। मुश्किलें और परेशानियां भी आएंगी, तेरा हौंसला ही तेरा सबल बनेगा।

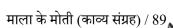
कामयाबी न मिले तो कोई बात नहीं। रहते सदा एक जैसे हालात नहीं। पूरी तैयारी रख आगे बढ़ने की, तुझसे ज्यादा किसी में करामात नहीं।

आगे बढ़ने का इंतजार नहीं किया जाता। विपदाओं को देखकर पीछे नहीं हटा जाता। दिल में कुछ अलग करने का इरादा है तो, ऐसे लोगों का ही तो इतिहास लिखा जाता।

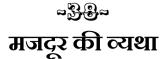


जगदीश श्योराण / 88









एक मजदूर कितना जीता है अभावों में। गर्मी, सर्दी और बरसात की काली घटाओं में। उसे हर रोज लड़ना पड़ता है, विपदाओं में। चाहे जो भी हो इसकी चिन्ता नहीं करता, पर अक्सर टूट जाता है वह अभावों में।

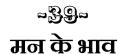
क्या कभी उसकी तरक्की का रास्ता भी निकलेगा। उसे भी किसी दिन भर पेट खाना मिलेगा। महलों को बनाने में सारा जीवन गुजर गया। उसका सपना टूटी झोपड़ी में ही बिखर गया।

पेट पालने के लिए उसे क्या नहीं करना पड़ता। फिर भी वह कभी मेहनत करने से नहीं डरता। अपना पसीना देकर उसने इमारतें बना दी। खुद भूखा रहकर अमीरों की दुनिया सजा दी।



उसके पसीने का मोल कब मिल पाएगा। क्या कभी उसकी झोपड़ी में भी उजाला आएगा। इसी उम्मीद में वह इतना श्रम करता है। दूसरों के काम करने में जीवन गुजरता है। एक मजदूर कितना मजबूर होता है। उसकी तरह जीने पर ही पता चलता है।





बिना बोले ही तुम आंखों से सब कह जाते हो। मौन रहकर भी तुम कितना सह जाते हो।

> अपने जज्बातों को तुमने, नया आयाम दिया है। चुपचाप रहकर तुमने, अपनी प्रीत को नाम दिया है।

तुम्हारी ये आंखें सब कुछ, तो कह जाती हैं। होठों पर आह भी नहीं भावनाएं भीतर ही रह जाती हैं।

मौन के पीछे छुपाकर, कितनी प्रीत दिखती है। तुम्हारी ये अलग सी दुनिया, कितनी हसीन लगती है।





मैं और तुम दूर रहकर भी, कितने पास लगते हैं। प्रीत की कोई भाषा नहीं होती, फिर भी कितना विश्वास रखते हैं।

कैसे बिना बोले ही हम, इस दोस्ती को निभा रहे हैं। मौन की इस शब्दहीन भाषा को, आंखों से ही समझा रहे हैं।

पर विश्वास रखना हम ऐसे ही, यह जीवन बिता देंगे। बिना एक शब्द बोले ही हम, जीवन भर का साथ निभा देंगे। ****









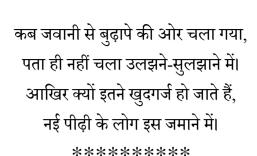
हाथों की लकीरें मिट गईं इस घर को सजाने में। सारी उमर गुजार दी उनके लिए कमाने में।

जो कुछ कमाया था अपनी मेहनत से, कोई कमी नहीं छोड़ी उनको बड़ा बनाने में। जिनको इतना बड़ा किया सब कुछ देकर, कितना समय गुजार दिया उन्हें समझाने में।

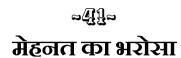
हार जाता है वही आदमी, जब कहे कोई, क्या यही वजूद दिया है जमाने में। मेरी उमर ढल गई है शाम की तरह, और उन्हें एक पल नहीं लगता सुनाने में।

अपनी ख्वाहिशों का गला घोंट दिया, औलाद के लिए दो वक्त की रोटी कमाने में। उन्हें चांद तारों तक सब समझाया है, फिर चैन से टुकड़ा भी न दे कोई खाने में।









आखिर इस घुटन से बाहर कैसे आएंगे। जिन्दगी का सवाल कैसे हल कराएंगे।

खुदगर्जों की भीड़ से डर लगने लगा।
बदलते परिवेश में हर कोई छलने लगा।
दिखावे के आगे सच्चाई का मोल नहीं रहा।
किसका विश्वास करें अब मेल-जोल नहीं रहा।
कुछ लोग लगातार कोशिश तो करते हैं।
पहल करने में वे भी दुनिया से डरते हैं।
शुरुआत होगी तो राह भी मिल जाएगी।
आज जो कली है एक दिन वो खिल जाएगी।
पहले सा विश्वास अब खत्म हो रहा है।
बदलते रंग-ढंग में सब कुछ खो रहा है।
क्या कभी फिर वो समय आएगा।
टूटते रिश्तों को कोई जोड़ पाएगा।
हर सवाल का जवाब होता अपने आप हल।
समय के साथ कदम मिलाकर तो चल।

भरोसा करोगे तो भरोसा भी मिलेगा। जिन्दगी में जब साथ सबके चलेगा।



जगदीश श्योराण / 96





पत्नी की फटकार अनोखी, कैसी करती है ये मार पत्नी की झिड़की सुनकर, खुलते ज्ञान चक्षु के द्वार।

सुबह सबेरे पड़े डांट तो, चाय नाश्ते का क्या कहना, बिन खाये पेट भर जाता है। सारा दिन अच्छा जाता है।

ऑफिस में जाने से पहले, देखे एक कड़ी नजर। आंख महका सारी भूले, दिन भर रहता खूब असर।

जब छुट्टी का दिन आए, तो दिखते हैं दिन में तारे। झाडू-पोंछा साथ कराये, फिर भी झाड़ पड़े प्यारे।



छोटी-मोटी गलती पर भी, यहां माफी का काम नहीं। आगे-पीछे फिरते-फिरते, मिलता कभी इनाम नहीं।

जब जाती है मायके पत्नी, बैठी वहां से देती ज्ञान। ये करके फिर वो कर लेना, फूट-फूट रोया नादान। ***





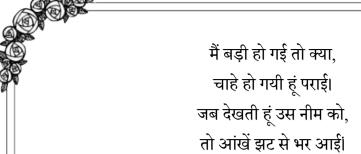
बचपन की यादें

इन आंखों से गुजरी है, मेरे बचपन की परछाई। जब याद आते हैं वो दिन, तो आंखें झट से भर आई।

कैसे गुजरे थे वो दिन, आंगन में नीम के नीचे। जब बरसता था सावन, मैं बैठ जाती आंखें मीचे।

मुझे सुलाने के लिए मां, लोरियां गाया करती। अपनी छोटी सी गुड़िया को, कहानियां सुनाया करती।

मेरा छोटा झूला पता नहीं, आज है भी या नहीं। वो गुड़िया जिसको साथ सुलाती थी, कहीं है या वो भी नहीं।





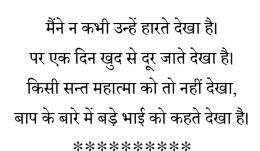


मैंने बरसों से उनको चलते देखा है। अपने इरादों को फौलाद में बदलते देखा है। चाहे वक्त ने उसे कितने ही घाव दिए हों, मैंने उनको हर हालात में लड़ते देखा है।

उम्र के आखिरी पड़ाव तक न थकते देखा है। विपत्तियों से कदम-कदम पर लड़ते देखा है। मेरे इस घर की नींव के वे पहले पत्थर थे, अन्त तक इस घर को संवारते देखा है।

खेत और खलिहानों में काम करते देखा है। बाढ़ और सूखे से अक्सर झगड़ते देखा है। अपने परिवार के पालन-पोषण के लिए, सर्दी और गर्मी को सरेआम नकारते देखा है।

पहाड़ से दुःख में भी उन्हें सम्भलते देखा है। बच्चों की पढ़ाई के लिए समाज से भिड़ते देखा है। बहुत बार हराया होगा तूने मेरे जन्म से पहले, इस बात की चर्चा मां से अक्सर करते देखा है।







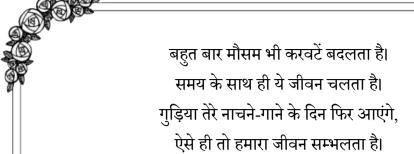
सर्दी का मौसम

इतनी ठण्ड में तो पिघल जाएगी, नदी नालों में भी बर्फ नजर आएगी। सम्भाल के रखना, अपने आपको, कुछ दिन में जिंदगी वापस लौट आएगी।

हम तो बरसों से इसको देख रहे हैं। कितने पौ-माह के जाड़े सहे हैं। तुम अभी बहुत छोटी हो गुड़िया, हम इसको बरसों से देख रहे हैं।

हमने तो बहुत फौलाद पिघलाए हैं। गर्मी से लौ लेकर हम बर्फ में नहाए हैं। ये सर्दी-गर्मी कोई मायने नहीं रखती, अपने श्रम से नये आशियां बनाए हैं।

कुछ दिन खून को पसीना बना लेना। जिंदगी की रफ्तार को तेज चला लेना। एक दिन बर्फ फिर पिघल जाएगी, फिर से अपने खिलौनों को सजा लेना।







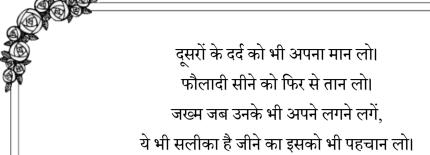
दूसरों का दर्द देखकर कुछ तो पिघलते रहिये अपने जख्मों को न यूं रोज बदलते रहिए।

जिंदगी में कितने लोग आएंगे भटकाने के लिए, सच्चाई और ईमानदारी से डिगाने के लिए। इरादों को मजबूती खुद को ही देनी है, बहुत मिल जाएंगे बेवजह सताने के लिए।

न निराशा देनी है और न निराश होना है। अपने बाजुओं के दम से सब कुछ होना है। दूसरों के दर्द को अपना मान कर देख, अपने लिए तो फिर बेकार रोना है।

जिंदगी में बाधाएं भी बहुत आती हैं। मजबूत इरादों के आगे सब ढह जाती हैं। पथरीली राहें रास्ता तो नहीं रोक सकतीं, आगे बढ़ने वालों की ये हमसफर बन जाती हैं।









बदलते जमाने में कुछ अलग कर दिखाते हैं। फूल सी बेटियों को फिर से फौलाद बनाते हैं।

दिरंदों की भीड़ बहुत हो गई है। जिनको उन्हें मसलने की आदत पड़ गई है। जो उन्हें लाचार-बेबस समझने लगे हैं। अबला समझकर अत्याचार करने लगे हैं। अपने हाथों को तलवार बनाना सिखाते हैं।

डर-भय की बात मन में न आए। जब बेटियां भी अपना रौद्र रूप दिखाएं। किसकी हिम्मत है जो छू ले उसका आंचल। फौलादी सीना लेकर अब खुले में चल। जो बनाते हैं वही एक दिन मिटाते हैं।

जो कमजोर समझने की भूल करते हैं। ऐसे लोग मूर्खों के स्वर्ग में रहते हैं। बेटियों की तरफ जो उठे बुरी निगाहें। समय है अब भी वो सम्भल जायें।



नहीं तो उनके लिए यमलोक का रास्ता बनाते हैं। बहुत सह लिया है, अब सहा नहीं जाता। हर बात के लिए तो किसी को कहा नहीं जाता। समाज को बदलने का बीड़ा उठाना पड़ेगा। बेटियों को भी अपना रौद्र रूप दिखाना पड़ेगा। वहशी दिरंदों को भी अब यमलोक दिखाते हैं। ******





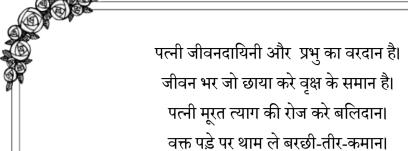
सच्चा हमसफर

जब चारों तरफ निराशा हो, अधियारा और कुहासा हो, कोई तदबीर काम न आये, ऊपर वाले से न आशा हो।

तब अपने घर के भगवान को पहचान लो। संकट के साथी पत्नी को परमेश्वर मान लो। मन्दिर-मस्जिद में कुछ न मिलेगा। वहां बैठा पुजारी भी तब क्या कहेगा।

जब घर में आठों पहर भगवान रहता है। दुःख-पीड़ा-परेशानी साथ सहता है। फिर क्यों दर-दर माथा टिकाते हो। घर के भगवान को क्यों बिसराते हो।

जो हर संकट का साथी है। वो सच्चा एक हिमाती है। दो मीठे बोलों के लिए सब कुछ न्यौछावर करता है। बीमारी और गरीबी में भी कभी नहीं डरता है।



अब इधर-उधर भटकना छोड़ दो। अपने घर के भगवान से नाता जोड़ लो। ****





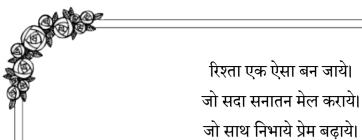
ये कैसे रिश्ते-नाते हैं। सब बेकार की बातें हैं।

एक भार सा ढोये जाते हैं। फिर भी इन्हें निभाते हैं। ये कई रूप दिखलाते हैं। कहीं हंसते कहीं रुलाते हैं।

बंधन की दीवारों से कई बार घिर जाते हैं। बिना बात के ये रिश्ते कई बार छल जाते हैं। साथ निभाने वाले भी बुरे वक्त टल जाते हैं। खुदगर्जी में ये रिश्ते कई बार खल जाते हैं।

जो वक्त के साथ बदलता जाये।
आखिर उसको कैसे निभाये।
जो दुःख में दुःख को और बढ़ाये।
फिर क्यों रिश्तों का जाल फैलायें।





ऐसा रिश्ता सबको भाये।





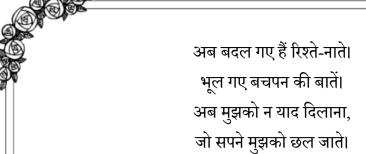
मन के भाव

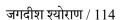
मेरी ओर निशाना करके, क्यों कमजोर बनाते हो। अपने मन के भावों को, अब क्यों मुझ पर अजमाते हो।

मेरा तुझसे दूर ठिकाना, मुश्किल है अब वापिस आना। अब तेरी दुनिया तुझसे रोशन, समझो अब हमको बेगाना।

दूर देश अब चले गए हैं, बरसों तक हम छले गए हैं। भूल रहे हैं तेरी गलियां, जहां कितने हमने दर्द सहे हैं।

जब दिल कहता है तो बात नहीं, अब तेरा-मेरा साथ नहीं। अपनी मस्ती में जीने दे, बरसों पुराने जज्बात नहीं।









याजन मनभावन

चांद-सितारों का क्या करना। महल-चौबारों का क्या करना। एक तेरी हंसी के आगे साजन, झूमे घर का कोना-कोना।

तेरी मुस्कान से मेरी दुनिया बदल जाती है। दिनभर की थकान पल में मिट जाती है। तेरा इंतजार करते-करते शाम ढल जाती है। सपने देखते-देखते रात भी बदल जाती है। कभी प्यार से नजर भी तो मिलाया करो। नहीं चाहती कि मेरे काम में हाथ बंटाया करो। कितना अकेलापन हो जाता है तेरे न आने से। दिल नहीं मानता रात भर समझाने से। आखिर तेरे लिए कितना करती हूं सारा दिन। ये आंगन सूना सा लगता है तेरे बिन। ये भी नहीं चाहती सब कुछ मेरा ही हो। इतना करके भी चाह है नाम तेरा ही हो। बस कभी-कभार साथ बैठ तो जाया करो। दिनभर की उदासी में कभी तो हंसाया करो।



चांद-तारे लाने की जिद तो नहीं करती।
आसमानों में उड़ने की हट तो नहीं करती।
अलग-अलग नामों से चाहे न पुकारो।
अपनी इस आधी दुनिया को भी संवारो।
ये सफर भागते-दौड़ते ही गुजर जाएगा।
तुम्हारी मुस्कान से ही ये घर संवर जाएगा।
तुम इतना मुस्कुराया करो।
अगर मुझे भी हंसाया करो।
समझो मेरे दिल की बात को,
फिर चाहे कितना भी सताया करो।



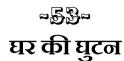


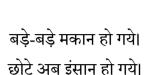
एक दिन पास आके अधिकार मांग लेना। हम पर भरोसा हो तो अपना प्यार मांग लेना।

छोटी सी जिन्दगी है, ऐसे ही न बीत जाये। देखते ही रहें और मुंह से कुछ न कह पायें। इतने पास होकर भी कितने दूर हो गये हैं। पता नहीं क्यों इतने मगरूर हो गये हैं। दूर से देखने की ये सजा कब तक रहेगी। इन बेसब्र नैनों से ये नदियां कब तक बहेंगी। विश्वास हो हम पर तो उपहार मांग लेना। हम पर भरोसा हो तो अपना प्यार मांग लेना।

ये दूरियां तो मिटाने से ही मिटेंगी।
प्यार की पींगे दूर से नहीं चढ़ेंगी।
पास आकर दो बात तो करके देखो।
दिल के निकट दिल को लाकर देखो।
मेरी भी तमन्ना बहुत है तेरा साथ पाने की।
सुख-दुःख हर घड़ी तेरा साथ निभाने की।
एक दिन तुम हमसे सोलह श्रंगार मांग लेना।
हम पर भरोसा हो तो अपना प्यार मांग लेना।







दीवारों से घिर गए सारे। कैद हो रहे अरमां सारे।

ऊंचे महल दुमहले हो गये। सब नहले पर दहले हो गये।

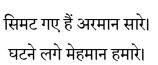
दम घुटता है दीवारों में। तन जलते हैं अंगारों में।

एक-दूसरे से दूर हो गये। कितने अब मजबूर हो गये।

छोटे अब परिवार हो गये। बुजुर्ग अब घर से बाहर हो गये।







रिश्ते सारे दरक रहे हैं। मिलने से भी तरस रहे हैं। अब सर्दी-गर्मी एक समान। मां-बाप भी बने मेहमान।

अब कैसे ये दीवारें तोड़े। घर अपने को कैसे छोड़े।

बंधक बनके रहना होगा। किया कर्म तो सहना होगा।



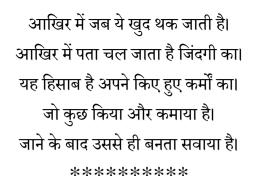




आखिर ये जिंदगी क्या है। इसको समझने में जिन्दगी गुजर जाती है। पता नहीं ये कैसे-कैसे दिन दिखाती है।

कभी बहुत उदास कर जाती है। तब जीने की आस मर जाती है। कभी एक आग सी लगती है जिंदगी। कभी उदासी में राख सी लगती है जिंदगी। समझने में ही समय बीत जाता है। इसका सही भेद कहां आता है। कई बार बहुत हंसा जाती है। तो दूसरे दिन रुला जाती है। ये तो पता है हंसना-रोना साथ चलता है। कडवे-मीठे का स्वाद भी साथ चलता है। समय का चक्र ऐसे ही चलते जाता है। कई बार हंसाते तो फिर रुला के चला जाता है। पर एक बात समझ में आती है। ये जिंदगी बहुत कुछ बताती है। सारी भाग-दौड़ बेकार सी लगती है।

जगदीश श्योराण / 120







दूसरे घर में ताकझांक

आखिर तुझको क्या मिलता है, मुझको रोज सताने में। मेरे घर में आग लगाकर, मुझको यूं रोज जलाने में।

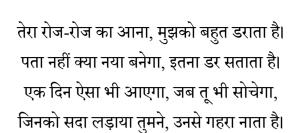
तेरी चालों से डरकर, अब इतना दूर ठिकाना है। फिर न जाने घर आने का मिलता क्या बहाना है। तेरी कुटिल चालों को समझ न पाये जाने क्यों, हम भोलेपन के क्या कहते तुझे जाने सारा जमाना है।

हम सहते रहे कि इस घर में तेरा सम्मान बना रहे। अपमान सहा केवल हमने, तेरा यहां स्थान बना रहे। तू कितना खुदगर्ज रहा, क्या इतना भी सोचा है, तेरा आखिर क्या जाता जो मेरा भी मान बना रहे।

इक तेरी बातों के कारण कितना सहना पड़ता है। तू तो कहकर चला गया, फिर हमको रोना पड़ता है। मेरे घर में रोज लड़ाई तेरे कारण होती है, एक-द्जे से दूर हुए नहीं, फिर भी रहना पड़ता है।



जगदीश श्योराण / 122



साथी मेरे बदल ले खुद को, हम लगे रहे समझाने में। यहां बाती की ज्यों जले बेचारी तो रह गया परवाने में। ******







लौटूंगा जब गांव में अपने, गवाह मेरे तब सारे होंगे। कफन मेरा तब देख तिरंगा, अश्रु नैन के धारे होंगे।

मुझको यहां पर पहुंचाने में कितने पापड़ बेले होंगे। मेरी खातिर मां-बाबा ने कितने दुख तब झेले होंगे। मेरे सीमा पर जाने से नाम गांव का रोशन होगा। ममता फिर भी खुश है, अन्दर से भारी मन होगा। मुझको विदा करते समय, तब कितने देव पुकारे होंगे। कफन मेरा तब देख तिरंगा, अश्रु नैन के धारे होंगे।

उतार आरती करे विदा, वो गीत विरह के गाती होगी। कितने आंसू बाहर न आए, कैसे वो समझाती होगी। उसकी पीड़ा को जो समझे, आखिर ऐसा है वो कौन। बाती की ज्यों जले अकेली, कितनी होगी अब वो मौन। उस दिन उसके संग में रोये, सूरज-चांद-सितारे होंगे। कफन मेरा तब देख तिरंगा, अश्रु नैन के धारे होंगे।



जगदीश श्योराण / 124



मेरे सब बचपन के साथी, किस्से मेरे सुनाएंगे। पर उनमें कुछ ऐसे होंगे, जो मुझको भूल न पाएंगे। गांव मेरा यूं लौट के आना, कैसे मन समझाएंगे। दिल पर पत्थर अपने रखकर, कैसे मुझे भुलाएंगे। इतना सब कुछ होने पर, तो कैसे दिन गुजारे होंगे। कफन मेरा तब देख तिरंगा, अश्रु नैन के धारे होंगे।

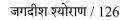
किसने तब ये सोचा होगा, एक दिन वापिस आऊंगा। जिस घर का कोई नाम नहीं, उसको पहचान दिलाऊंगा। मेरे बिना तब चर्चा होगी, मेरे गांव और नाम की। मुझको इतना याद करेंगे, मेरे ऊंचे काम की। मेरे गांव की गलियों में तब मेरे नाम के नारे होंगे। कफन मेरा तब देख तिरंगा, अश्रु नैन के धारे होंगे। ****







एक दिन युं ही मिला एक मीत। जिसका प्यारा सा नाम है सुमित। इतनी हो गई उससे मेरी पहचान। जिससे पहले न थी जान-पहचान। जीवन में मिल गई एक नई मुस्कान। वरना तो हम भी कितने थे वीरान। कभी वो लिखे कुछ अपनी बात। बरसों से दबे पडे थे जज्बात। उसने दी है एक नई सौगात। जिसने बदल दिए सब हालात। कभी भावनाओं का दरिया बहता है। फिर कई बार बहुत चुप सा रहता है। बातों को कितना सोच के कहता है। तभी तो हमारे लिए उनकी महत्ता है। लिखता है सबसे अलग रचनाएं। समझता है वो सबकी भावनाएं। उनको हर कोई पढ़ नहीं पाया। उसने तो हमें भी लिखना सिखाया। एक इच्छा है उनसे मिलकर बात कर लूं। अध्रा है जो गीत उसे भी पुरा कर लुं। ******







सुन मीत तुम्हारी आंखों में, ये आंसू क्यों आ जाते हैं। तुम गम से सदा आजाद रहो, हर बार तुम्हें समझाते हैं।

चाहे कितनी बार कहें तुमसे, ये पल दो पल की दूरी है। ये चांद और तारे रोक न पाएं, बस थोड़ी सी मजबूरी है।

खुशियों को अपना मीत बना, इस जीवन को संगीत बना। गम छोड़ के जीना आ जाए, ऐसा ही एक गीत बना।

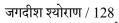
जो सहन बिछौड़े करते हैं, वो दिल से नहीं लगाते हैं। हम पास रहें या दूर रहें, तुझको भूल न पाते हैं।



क्यों इतनी चिन्ता करते हो, क्या मिल जाएगा रोने में। अपना साथी खुद ही मानो, क्या होगा आंखें खोने में।

कौन किसी की यहां सुनता है, हम कहकर भी थक जाते हैं।

तुमसे है कोई बात ही ऐसी, अपने को रोक न पाते हैं। सुन मीत तुम्हारी आंखों में, ये आंसू क्यों आ जाते हैं। ****







कितना कुछ दिखाती हैं ये आंखें। जीवन को खूबसूरत बनाती हैं ये आंखें।

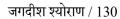
कभी आदमी को उठाती हैं ये आंखें। और कभी नजरों से गिराती हैं ये आंखें। हर एक को उंगलियों पर नचाती हैं ये आंखें। पर अक्सर दिल को दिल से मिलाती हैं ये आंखें। प्यार में कितने रंग दिखाती हैं ये आंखें। दिल की जुबान भी बन जाती हैं ये आंखें। कई बार दिल को ठग जाती हैं ये आंखें। मन की पीड़ा को भी बताती हैं ये आंखें। गम में आंसू भी बहाती हैं ये आंखें। खुशी के समय मुस्कुराती हैं ये आंखें। कभी दोस्त बन मेल कराती हैं ये आंखें। कभी दश्मनी का रूप भी दिखाती हैं ये आंखें। ग्स्से में कितना डराती हैं ये आंखें। अंधकार से हमें बचाती हैं ये आंखें। नई-नई राह दिखाती हैं ये आंखें।



≈**डि**⊕≈ धूप

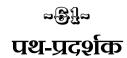
तुम सर्दी की धूप सी, कभी-कभी घर आती हो। कभी अंधेरा कभी उजाला, फिर दूर कहीं चली जाती हो।

सुबह-सबेरे राह मैं देखूं, सोचूं आज तो आओगी। मेरी ठिठुरन बढ़ जाती है, जब बादल में छुप जाओगी। मेरे नैन अबोले होकर, तेरी ही राह तकते हैं। तुझसे हटता देख कुहासा, दिन मेरे यूं कटते हैं। मैं रातों में पहरा देकर, तुझको रात बुलाता हूं। बर्फ बने चाहे ठंडी रातें, इनसे कब घबराता हूं। तेरे आने से जीवन है, ये तो सारे जानते हैं।



सूरज से जब गर्मी मिलती, इसको सारे मानते हैं। जल्दी-जल्दी आया करो, तो लगता बहुत सुहाना है। सर्दी का श्रृंगार तुम्ही हो, बिना धूप के सब वीराना है। ***



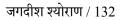


मेरे उनके रिश्तों के आगे, सब कुछ फीका लगता है। दूर रहे या पास रहे, पर साथ मेरे वो दिखता है।

जब उनसे बातें करते हैं। फिर भी हम इतना डरते हैं। सोच समझ कर देते बयान। इतना उनका रखते ध्यान।

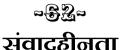
पर वो शायद इससे अनजान। देते उनको मन से सम्मान। उनसे हमको राह मिलती है। लिखने की कुछ चाह मिलती है।

जब लिखते हैं सब उनके भाव। बढ़ जाता है मन में चाव। सबको ऐसे रिश्ते नहीं मिलते। समझने वाले फरिश्ते नहीं मिलते।



कितना उनका गुणगान करें। कैसे उनका सम्मान करें। वो बिना नाम के करते काम। उस पथ-प्रदर्शक को बार-बार प्रणाम।





ये सर्दी पिछले साल से कुछ अलग है। जनता और सरकार में कुछ तलख है।

रिश्तों में तपन बहुत बढ़ रही है। जैसे धूप की चमक घट रही है। जुबान भी बदजुबान हो गई है। किसानी सडकों पर सो रही है। उनके ठहाके कम हो गये हैं। लगता है डर के मारे सो गये हैं। पता नहीं सर्दी में क्यों नहीं डर। पहली बार सड़कों पर बने हैं घर। इस ठण्ड में वो सडक छोड गये। दफ्तरों को छोड़कर गांव में दौड़ गये। कितना लोगों को समझाना पड़ता है। ठण्ड और बीमारी से डराना पडता है। पर कुछ लोग सर्दी से डरते नहीं। गर्मी से समझौता करते नहीं। इस सर्दी में दमखम का फैसला होगा। बर्फ जिनका बिछौना उन्हें क्या डर होगा। नरवरगढ जाने वाले तो जाएंगे। वो सर्दी-गर्मी से भी क्या घबराएंगे।

जगदीश श्योराण / 134





बुढ़ापे का शौक

वक्त से पहले बूढ़ा होकर, आखिर तुम क्या पाओगे। जिन लोगों के बीच में रहते, उनसे न मिल पाओगे।

समय से पहले रिश्ते बदले, पर क्या अच्छा लगता है। जाने वो किस भ्रम में रहते, बुढ़ापा कहां इतना सस्ता है। बड़े होने का शौक चढ़ा है, फिर वापिस कैसे लौटोगे। सोच-समझकर आगे जाना, वर्ना बाद में सोचोगे।

ये बचपन और जवानी सोचो, लौट के फिर न आएगी। एक बार जो चला गया तो, बात नहीं बन पाएगी। बुढ़ापा तो आखिरी सीढ़ी, अपने आप ही आने देना। इतनी जल्दी ठीक नहीं है, जवानी को न जाने देना।

अपने हाथों करने से तो, कितना सुख मिलता है। बेबस लोगों को देखो, फिर कोई न बस चलता है। मैंने उनको बहुत कहा है, इतनी जल्दी क्या करोगे। पर जाने क्या उनकी चाहत, आने पर तुम बहुत डरोगे।

अभी जवानी रहने देना, वर्ना बीमारी में घिर जाओगे। मेरी बात है एक दम साची, बाद में तुम पछताओगे।





सबसे उत्तम बचपन और जवानी

उनसे अब कोई बात न होगी, बचपन और जवानी की। सूरज -चन्दा और सितारे, फिर उस रात सुहानी की।

जो उनको अच्छे नहीं लगते, मुझको वो नहीं कहना है। सब कुछ उनको ही सोचना, अपने दम से रहना है। क्यों ऐसी हम बातें करके, रोज उसे परेशान करें। जिसको चाव बुढ़ापे का, उसका क्यों फिर ध्यान करें।

सबकी अपनी-अपनी फितरत, किसको क्या समझाना है। वक्त लगेगा सब समझेंगे, ये दस्तूर पुराना है। छोटी-छोटी बातों पर, कितना कुछ कह जाते हैं। उसका बचपन बना रहे, इसलिए सब सह जाते हैं।

शायद उनको वहम हो गया, मेरे इस समझाने का। बार-बार प्रश्न करते हैं, अपने गुजरे हुए जमाने का। यहीं बुढ़ापा यहीं जवानी, सबके आगे आता है। लोगों को तो बार-बार बचपन ही याद आता है।

जिनको ये अच्छा नहीं लगता, उनके घर वीरानी है। इस जीवन में सबसे उत्तम, बचपन और जवानी है।



जगदीश श्योराण / 136





मेरी एक सहेली बनकर, मुझको बहुत सताती है। पता नहीं क्यों बीच में आकर, मुझको रोज जलाती है।

मैंने उनको अपना समझा, पर उनको मुझसे प्रीत नहीं। कई बार ऐसा कर जाती, जैसे शत्रु है कोई मीत नहीं।

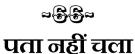
अन्दर तक की दौड़ बनाकर, क्या-क्या वो कर जाती है। वो तो कहकर चली गई, चेहरा आंसू से भर जाती है।

ऐसी आदत क्यों हो जाती है, आखिर क्या मिल जाता है। कई बार समझाया उसको, घर में कोहराम मच जाता है।



अब लगता है नहीं सहेली, कैसी-कैसी आग लगाती है। वो क्या जाने उनके बोलों से, मेरी हालत क्या बन जाती है। ***





आठ से साठ के कब हो गए, पता ही नहीं चला। खटोले से खाट के कब हो गए, पता ही नहीं चला।

हम अपना बचपन ही ढूंढते रहे, बेकार में इधर-उधर ही घूमते रहे, जवानी कब चली गई, उम्र कब ढल गई, पता ही नहीं चला।

खेलते-कूदते कब बड़े हो गए, जाने कब अपने पांव पर खड़े हो गए, सपने कैसे होते हैं, इनमें कैसे खोते हैं, पता ही नहीं चला।





पढ़ाई-लिखाई कैसे पूरी हो गई। जवानी तो आधी-अधूरी सी हो गई। कब चश्मे का नम्बर बढ़ गया, बिना बात के पारा चढ़ गया, पता ही नहीं चला।

कुछ कहते हैं अब तुम नहीं जानते, क्यों हमारी बातों को नहीं मानते, ये दिन एकदम कैसे आ गए, वो बचपन के दिन कहां गए, पता ही नहीं चला।

बचपन और जवानी में हम क्या करते रहे, शायद बेकार में ही यहां-वहां चलते रहे, अब खुद को कैसे समझाएं, कैसे अपनी उम्र बताएं, पता ही नहीं चला। ****







अब कैसे हैं सरकारी लिख दे, मिटगी क्यों ऐतबारी लिख दे, धर्म-जात से पेट भरे न, होगे नये पुजारी लिख दे।

उनकी कांटों की क्यारी लिख दे, एक दिया हुकम सरकारी लिख दे, किसकी खातर कांटे बोते, हमारी फूलों की एक क्यारी लिख दे।

हम हक के अधिकारी लिख दे, चाहे सीमा न्यारी-न्यारी लिख दे, आखिर कहां तक वो जाएंगे, अब हमारी भी बारी लिख दे।

हमारे खेतों की फुलवारी लिख दे, कई सालों की त्यारी लिख दे, मिट्टी के संग मिट्टी होकर, हम देते हैं तरकारी लिख दे।



उस राजा की मक्कारी लिख दे, पुराना एक भिखारी लिख दे, कितनी और परीक्षा होगी, अब लड़ने की तैयारी लिख दे।

थोड़ी संयम और समझदारी लिख दे, एक भाषण की पिटारी लिख दे, किसकी खातिर ये सब करते, आखिर में अत्याचारी लिख दे। ****





गुजरा हुआ साल

ये कैसा बीता साल कबीरा। सबकी आंखें लाल कबीरा। महामारी और महंगाई ने, कर दिया बुरा हाल कबीरा।

कई राह चलते ही चले गए। कई घर बैठे ही छले गए। कोई शिकार दंभ का हो गया, शब्द बाण ऐसे चले गए।

कोई सत्ता मोह में खो गया। कोई सड़कों पर ही सो गया। निर्लजता की हदें पार कीं, जब कोई गैरों का हो गया।

जहां झूठ का कोई प्रचार करे। कोई सपनों का व्यापार करे। देश धर्म का ओढ़ लबादा, मजलूमों पर अत्याचार करे।



जहां विरोध दबाया जाता है। आपस में लड़ाया जाता है। ठीक किया वो बीत गया, जब गैरों का बताया जाता है।

जो बीत गया वो साल कबीरा।
अब ऐसे न हो हालात कबीरा।
ओ ऊपर वाले देख इधर भी,
अब कर दे मालामाल कबीरा।



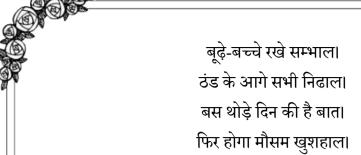


अब लम्बी रात सवेरा दूर। घर में रहने को मजबूर। चांद-चांदनी से क्या लेना, सूरज हो गया हमसे दूर।

अब चारों ओर कुहासा छाया। चिड़िया ने नया घर बनाया। मौसम की ये मार देखकर, दादी का चेहरा कुम्भलाया।

घास पर पानी है भरपूर। ठंड के आगे वो बेनूर। पानी भी तो बर्फ बन गया, नशा हो गया चकनाचूर।

ठंडी हवाएं ठिठुरन ले आई। तन भाती खूब रजाई। तन-मन जो गर्म रखना है, भाय सबको दूध मलाई।







पुरानी मुलाकात

बरसों बाद मिले तो उनसे जैसे कल की बात है। वही भाव और वही भावना, किसकी ये सौगात है। जिनसे ये संस्कार मिले हैं, कितने वो महान होंगे। जिसने ऐसा पाठ पढ़ाया, कैसे वो इंसान होंगे। हमने सोचा भूल गए हैं, पर ऐसी कोई बात न थी। चलते-चलते बात हुई थी, कोई ऐसी मुलाकात न थी। उनके मन के वही भाव थे, कितने सादे लगते थे। निश्छल मन और सीधी बातें. सच्ची बातें कहते थे।

हमको कितना अच्छा लगा, वो बात पुरानी ले आए। बरसों पहले की बातों को, आज तक न भूल पाए। ऐसे लोगों से मिलने को, बार-बार मन करता है। ढेरों उनसे बातें करते, पर थोड़ा सा डर लगता है। कितनी दूर ठिकाना उनका, जैसे आज पास ही था। एक पुरानी मुलाकात, पर आज भी उतना खास ही था।

कितने अच्छे होते हैं वो, जो रिश्ते निभाना जानते हैं। बरसों पुरानी मुलाकात को, अब भी कितना मानते हैं। सोचा एक दिन बात करेंगे, उनको सब समझाएंगे। निष्कपट मन रहे तो सबका, फिर क्यों हम घबराएंगे।

जाने कैसे हम मिल बैठे, इन अनजानी राहों पर। उनके लिए है यही कामना, सुखी रहे वो जीवन भर।



जगदीश श्योराण जन्म - 07 अप्रैल 1962 शिक्षा - एम.ए. (हिन्दी) डिप्लोमा-पत्रकारिता, आपदा



प्रबन्धन, मानवाधिकार, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा। सम्पति , इरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ट भिवानी से स

सम्प्रति- हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी से सहायक सचिव के पद से सेवानिवृत।

प्रथम काव्य संग्रह कच्ची माटी वर्ष 2021 में प्रकाशित। विभिन्न समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में लेख, कविता एवं कहानी आदि प्रकाशित। सम्पर्क- 2439, आदर्श कालोनी, गंगवा रोड, हिसार

e-mail - jagdishraisheoran@gmail.com

